MERIKHETI
मेरीखेती
अप्रैल 2026 I मूल्य: ₹49
www.merikheti.com

विषय सूची

सम्पादकीय

सलाहकार मंडल

खेत खलिहान 05 - 11

बागवानी फसलें 13 - 19

मशीनरी 20 - 33

कृषि सलाह 34 - 37

पशुपालन–पशुचारा 37 - 41

विज्ञापन के लिए संपर्क करें :
91-9899991906, 91-8800777501

संपादकीय

अप्रैल में अनाज भंडारण: सावधानी और वैज्ञानिक प्रबंधन की जरूरत

भारत जैसे कृषि प्रधान देश में अनाज उत्पादन जितना महत्वपूर्ण है, उतना ही जरूरी उसका सुरक्षित भंडारण भी है। अक्सर देखा जाता है कि किसान मेहनत से फसल तैयार करते हैं, लेकिन सही भंडारण के अभाव में बड़ी मात्रा में अनाज खराब हो जाता है। अप्रैल का महीना इस दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि इस समय रबी फसलों की कटाई के बाद भंडारण की तैयारी की जाती है।

अप्रैल में तापमान बढ़ने लगता है, जिससे कीट और फफूंद के प्रकोप की संभावना भी बढ़ जाती है। ऐसे में किसानों को वैज्ञानिक तरीकों से भंडारण की व्यवस्था करनी चाहिए। सबसे पहले भंडारण स्थल की अच्छी तरह सफाई करना आवश्यक है। पुराने अनाज के अवशेष, धूल और नमी को पूरी तरह हटाना चाहिए, ताकि कीटों के पनपने की संभावना खत्म हो सके।

भंडारण के लिए उपयोग किए जाने वाले बोरों, ड्रम या गोदामों को धूप में अच्छी तरह सुखाना चाहिए। नमी अनाज की सबसे बड़ी दुश्मन होती है, इसलिए यह सुनिश्चित करना जरूरी है कि अनाज पूरी तरह सूखा हो। यदि अनाज में 10-12 प्रतिशत से अधिक नमी होगी, तो उसमें फफूंद लगने का खतरा बढ़ जाता है।

इसके साथ ही, कीट नियंत्रण के उपाय अपनाना भी बेहद जरूरी है। किसान नीम की पत्तियों या सुरक्षित कीटनाशकों का उपयोग कर सकते हैं। गोदामों में समय-समय पर फ्यूमिगेशन (धूमन) करना भी एक प्रभावी तरीका है, जिससे कीटों को नियंत्रित किया जा सकता है।

भंडारण के दौरान अनाज को जमीन से ऊंचाई पर रखना चाहिए, ताकि नमी और चूहों से बचाव हो सके। लकड़ी के तख्तों या पैलेट का उपयोग करना एक अच्छा विकल्प हो सकता है। साथ ही, गोदाम में हवा के उचित आवागमन की व्यवस्था होनी चाहिए।

सरकार और कृषि विभाग द्वारा भी किसानों को आधुनिक भंडारण तकनीकों के प्रति जागरूक किया जा रहा है। साइलो स्टोरेज और आधुनिक वेयरहाउसिंग सिस्टम जैसे विकल्प भविष्य में अनाज संरक्षण के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

अंततः, यह समझना जरूरी है कि भंडारण केवल एक प्रक्रिया नहीं, बल्कि फसल की सुरक्षा का अंतिम और महत्वपूर्ण चरण है। यदि किसान अप्रैल महीने में थोड़ी सावधानी और वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाते हैं, तो वे अपनी मेहनत की कमाई को लंबे समय तक सुरक्षित रख सकते हैं।

इस प्रकार, सही भंडारण न केवल किसानों की आय बढ़ाने में सहायक है, बल्कि देश की खाद्य सुरक्षा को भी मजबूत बनाता है।

श्री दिलीप यादव
संपादक, मेरीखेती

सलाहकार मंडल

श्री छेदालाल पाठक
संरक्षक मार्गदर्शक

कृष्ण पाठक
फाउंडर, मेरीखेती

डॉ एम सी शर्मा
सेवानिवृत्त निदेशक एवं कुलपति आईवीआरआई
इज्जतनगर

प्रो. ए पी सिंह
पूर्व कुलपति, वेटरनरी विश्व विद्यालय,
मथुरा

डॉ. एस. के. गर्ग
कुलपति राजस्थान यूनिवर्सिटी ऑफ
वेटरनरी एंड एनिमल साइंस

डॉ हरि शंकर गौड़
पूर्व कुलपति एसबीबीपीयूएटी, मेरठ, साइंटिस्ट,
गलगोटिया विश्वविद्यालय

डॉ. ओमवीर सिंह
निदेशक बीज प्रमाणीकरण (सेवानिवृत्त)
उत्तर प्रदेश

डॉ उदय भान सिंह
डीन कृषि महाविद्यालय, कुम्हेर, भरतपुर,
राजस्थान

डॉ. अनिल कुमार सिंह
प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रभारी
भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, पूसा

डॉ एसके सिंह
प्रोफेसर सह मुख्य वैज्ञानिक डॉ. राजेंद्र प्रसाद
केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा बिहार

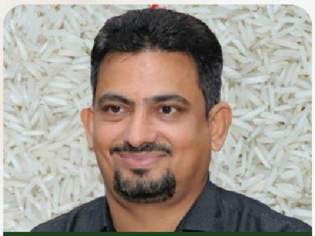

डॉ रितेश शर्मा
प्रधान वैज्ञानिक, बासमती निर्यात विकास फाउंडेशन
(एपीडा, वाणिज्य मंत्रालय, भारत सरकार)

डॉ सी बी सिंह
एक्स – सीनियर साइंटिस्ट, IARI, पूसा

तेजपाल सिंह
प्रगतिशील किसान

कपास की खेती कैसे करें - जानें, बुआई का सही समय

कपास की खेती में अपनाएं सही तरीका होगी बंपर पैदावार

देश के कई हिस्सों में कपास की बुआई का समय शुरू हो चुका है, और ऐसे में सही तकनीक अपनाना किसानों के लिए बेहद जरूरी हो जाता है। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार ने किसानों के लिए महत्वपूर्ण दिशानिर्देश जारी किए हैं, जिनका उद्देश्य कम लागत में अधिक उत्पादन प्राप्त करना है। इन सलाहों में बुआई का सही समय, बीज का चयन, खाद एवं उर्वरक प्रबंधन, सिंचाई तकनीक और बीज उपचार जैसी अहम जानकारियाँ शामिल हैं। यदि किसान इन वैज्ञानिक तरीकों को अपनाते हैं, तो कपास की फसल से बेहतर उपज और गुणवत्ता प्राप्त की जा सकती है।

कपास की बुआई का सही समय

कपास की सफल खेती (Cotton Cultivation) के लिए बुआई का समय सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। देसी कपास की बुआई अप्रैल महीने में पूरी कर लेनी चाहिए, ताकि पौधों को अनुकूल मौसम मिल सके। वहीं, बीटी नरमा की बुआई मध्य मई तक समाप्त कर देना उचित माना गया है। विश्वविद्यालय ने विशेष रूप से जून महीने में नरमा की बुआई करने से मना किया है, क्योंकि इस समय तापमान और कीटों का प्रकोप बढ़ जाता है, जिससे फसल को नुकसान होने की संभावना रहती है। सही समय पर बुआई करने से पौधों का विकास बेहतर होता है और उत्पादन में वृद्धि होती है।

बुआई की दिशा और सही तरीका

कपास की बुआई (Cotton Sowing) से पहले खेत में गहरा पलेवा देना जरूरी होता है, जिससे मिट्टी में पर्याप्त नमी बनी रहती है और बीज का अंकुरण बेहतर होता है। बीजों को हमेशा पूर्व से पश्चिम दिशा में बोना चाहिए, ताकि पौधों को दिनभर पर्याप्त धूप मिल सके और उनका विकास संतुलित रूप से हो। इसके अलावा, बुआई सुबह या शाम के समय करनी चाहिए, जब तापमान अपेक्षाकृत कम होता है। इससे बीजों का अंकुरण बेहतर होता है और पौधों पर गर्मी का दुष्प्रभाव नहीं पड़ता।

खरपतवार नियंत्रण के उपाय

कपास की फसल में खरपतवार नियंत्रण अत्यंत आवश्यक है, क्योंकि ये पौधों से पोषक तत्वों की

प्रतिस्पर्धा करते हैं। इसके लिए बुआई के तुरंत बाद या अंकुरण से पहले स्टोम्प (लगभग 2 लीटर प्रति एकड़) का छिड़काव करना चाहिए। यह उपाय शुरुआती अवस्था में खरपतवारों को नियंत्रित करता है, जिससे फसल को पोषक तत्वों की पर्याप्त उपलब्धता मिलती है और पौधों का विकास बेहतर होता है।

ड्रिप सिंचाई (टपका विधि) से बेहतर परिणाम

ड्रिप सिंचाई तकनीक कपास की खेती में पानी की बचत और बेहतर उत्पादन के लिए बेहद उपयोगी मानी जाती है। बुआई के बाद अंकुरण से पहले सुबह और शाम 10–15 मिनट तक ड्रिप सिस्टम चलाना चाहिए, जिससे मिट्टी में नमी बनी रहती है। अंकुरण के बाद हर 4 दिन के अंतराल पर 30–35 मिनट तक सिंचाई करना उचित रहता है। यह विधि पानी के कुशल उपयोग के साथ पौधों की जड़ों तक सीधे नमी पहुंचाती है, जिससे फसल की वृद्धि में सुधार होता है।

खाद और उर्वरक प्रबंधन

कपास की अच्छी पैदावार के लिए मिट्टी की जांच करवाना बेहद जरूरी है, ताकि आवश्यक पोषक तत्वों की सही मात्रा निर्धारित की जा सके। बीटी नरमा के लिए प्रति एकड़ 1 बैग यूरिया, 1 बैग डीएपी, 30–40 किलोग्राम पोटाश और 10 किलोग्राम जिंक सल्फेट (21%) का उपयोग करना चाहिए। वहीं, देसी कपास के लिए प्रति एकड़ 15 किलोग्राम यूरिया और 10 किलोग्राम जिंक सल्फेट पर्याप्त होता है। संतुलित उर्वरक प्रबंधन से पौधों को सभी आवश्यक पोषक तत्व मिलते हैं, जिससे उनकी वृद्धि और उत्पादन क्षमता बढ़ती है।

उन्नत किस्में और बीज की मात्रा

कपास की बेहतर पैदावार के लिए उन्नत किस्मों का चयन करना आवश्यक है। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय द्वारा विकसित देसी किस्मों में HD 123 और HD 432 प्रमुख हैं, जो बेहतर उत्पादन देने के लिए जानी जाती हैं। बीज की मात्रा भी फसल की सफलता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। अमेरिकन कपास के लिए 6–8 किलोग्राम (रोंये उतारे बीज) और 8–10 किलोग्राम (रोंएदार बीज) प्रति एकड़ की आवश्यकता होती है। देसी कपास के लिए यह मात्रा क्रमशः 5 किलोग्राम और 6 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर होती है। वहीं, बीटी नरमा के लिए 2 पैकेट प्रति एकड़ पर्याप्त होते हैं। पौधों के बीच उचित दूरी (100×45 सेमी या 67.5×60 सेमी) बनाए रखना भी जरूरी है, जिससे पौधों को पर्याप्त जगह और पोषण मिल सके।

बीज उपचार से फसल सुरक्षा

बीज उपचार कपास की खेती का एक महत्वपूर्ण चरण है, जो फसल को शुरुआती 40–45 दिनों तक रोगों और कीटों से सुरक्षित रखता है। इसके लिए 10 लीटर पानी में एमिशन (5 ग्राम), स्ट्रेप्टोसाइक्लीन (1 ग्राम) और साक्सीनिक (1 ग्राम) मिलाकर घोल तैयार किया जाता है। रोंएदार बीजों को 6–8 घंटे और रोंये उतारे बीजों को लगभग 2 घंटे तक इस घोल में भिगोना चाहिए। इसके बाद बीजों को छाया में सुखाकर बुआई करनी चाहिए, जिससे अंकुरण बेहतर होता है और रोगों का खतरा कम होता है।

दीमक से बचाव के उपाय

कपास की फसल (kapas ki kheti) को दीमक से बचाने के लिए बीज उपचार के बाद अतिरिक्त सावधानी बरतना जरूरी है। बीजों को छाया में सुखाने के बाद प्रति किलो बीज में 10 मिली क्लोरपाइरीफॉस 20 EC और 10 मिली पानी मिलाकर छिड़काव करें। इसके बाद बीजों को 30–40 मिनट तक छाया में सुखाकर बुआई करनी चाहिए। यह उपाय दीमक के प्रकोप को रोकता है और फसल की शुरुआती वृद्धि को सुरक्षित बनाता है। कपास की सफल खेती के लिए सही समय पर बुआई, उन्नत किस्मों का चयन, संतुलित उर्वरक प्रबंधन, उचित सिंचाई और बीज उपचार बेहद जरूरी हैं। Chaudhary Charan Singh

MASSEY FERGUSON

254 DynaSmart

#SabseBadaSmartAllrounder

Haryana Agricultural University द्वारा दी गई इन वैज्ञानिक सलाहों को अपनाकर किसान अपनी फसल की गुणवत्ता और उत्पादन दोनों में सुधार कर सकते हैं। इससे न केवल लागत कम होगी, बल्कि किसानों की आय में भी वृद्धि होगी।

देशी कपास की उन्नत किस्में

कपास एक प्रमुख रेशा फसल है। कपास सफेद सोने के नाम से मशहूर है। इसके अंदर नैचुरल फाइबर विघमान रहता है, जिसके सहयोग से कपड़े बनाए जाते हैं। भारत के कई इलाकों में कपास की खेती काफी बड़े स्तर पर की जाती है। इसकी खेती देश के सिंचित और असिंचित इलाकों में की जा सकती है। इस लेख में हम आपको कपास की खेती की संपूर्ण जानकारी देने वाले हैं, भारत में कपास की दो किस्मों की खेती की जाती है देशी कपास और अमेरिकन कपास। देशी कपास की खेती भारत में कई स्थानों पर की जाती है, भारत में इसकी कई किस्में मौजूद है। इस लेख में हम आपको देशी कपास की किस्मों के बारे में जानकारी देंगे।

1. उन्नत किस्में (Advanced Varieties):

- HD 107: देशी कपास की ये किस्म हिसार में विकसित की गयी, ये कपास की रोग प्रतिरोधी किस्म है , इसका रेशा लंबाई भी काफी अच्छी, होती है देशी कपास की ये किस्म हरियाणा-पंजाब-राजस्थान के लिए उपयुक्त।
- HD 432: ये देशी कपास की सूखा सहनशील किस्म है, इसका मध्यम रेशा काफी अच्छा होता है, उत्तरी भारत के शुष्क क्षेत्रों हेतु ये किस्म उपयुक्त है।
- RG 18: उड़ीसा व आंध्रप्रदेश के लिए ये किस्म तैयार की गयी है साथी ही यह किस्म रोगरोधी और अच्छी गुणवत्ता वाली है
- RG 8: दक्षिण भारत के लिए, उच्च उत्पादन और रोग प्रतिरोधक।
- DS 5: इस किस्म को कर्नाटक-महाराष्ट्र में उपयुक्त, कीट व रोग सहनशील माना जाता है ।
- LD 230, 327, 491: पंजाब में विकसित की गयी है, इस किस्म से अच्छी गुणवत्ता और उत्पादकता मिलती है।

2. प्रचलित किस्में (Popular Varieties):

- HD 123, HD 324: उत्तरी भारत के लिए, बेहतर उत्पादन व रेशा वाली किस्म है।
- RG 542: ये दक्षिण भारत में प्रचलित, सूखा सहनशील और अच्छा फाइबर देने वाली किस्म है।

3. संकर किस्में (Hybrid Varieties):

- AAH 1: देसी कपास का पहला संकर, उच्च उपज, बेहतर रेशा।
- राज DH 9: राजस्थान के लिए, रोगरोधी और अधिक उत्पादन।
- HHH 223, 287: हरियाणा हेतु, अच्छा फाइबर व उत्पादन।
- KR 64: कर्नाटक में विकसित, कीट प्रतिरोधी, उच्च उपज।
- CICR 2: नागपुर से विकसित, रोग सहनशील, संकर व अधिक उपज।

4.CICR Series (CICR 1, 2, 3):

- CICR 1: ये देशी कपास की सूखा सहनशील, लंबा रेशा वाली किस्म है।
- CICR 2: ये देशी कपास की संकर, अधिक उपज देने वाली किस्म है।
- CICR 3: ये किस्म भी रोग प्रतिरोधी, उच्च गुणवत्ता वाली है।

5 AAH-1 (हिसार):

- देसी कपास का पहला संकर, 20-22 क्विंटल/ हेक्टेयर उपज, गुलाबी सुंडी प्रतिरोधी, 150-160 दिन में तैयार।
- उपयुक्त क्षेत्र: हरियाणा, पंजाब, राजस्थान।

भारत में सिसल की खेती की विस्तृत जानकारी

सिसल एक शुष्क जलवायु में उगाया जाने वाला पत्ती रेशा उत्पादक पौधा है, जिसकी पत्तियाँ मोटी, लंबी (1 से 1.5 मीटर), और रसीली होती हैं। इनकी सतह पर एक मोमयुक्त परत होती है, जिससे यह मरूद्भिद (xerophytic) पौधों की श्रेणी में आता है। एक स्वस्थ सिसल पौधा अपने औसतन 10–12 वर्षों के जीवनकाल में 200–250 पत्तियाँ देता है। इससे निकाला गया रेशा रस्सी, सुतली, कार्पेट बैकिंग, ब्रश और अन्य औद्योगिक उत्पादों में उपयोग किया जाता है।

उपयुक्त जलवायु:

सिसल अधिक तापमान सहन कर सकता है और 50°C तक जीवित रह सकता है। इसके लिए 60–125 सेमी वर्षा वाले क्षेत्र उपयुक्त हैं। हालांकि, इसकी आदर्श वृद्धि 10°C से 32°C के तापमान में होती है। ओलावृष्टि से इसकी पत्तियाँ और रेशा क्षतिग्रस्त हो सकते हैं।

भूमि की आवश्यकता:

सिसल को हल्की, रेतीली-दोमट और चूना युक्त मृदा पसंद होती है। जल निकासी वाली भूमि इसके लिए सर्वोत्तम होती है, जबकि भारी और जलभराव वाली जमीन इससे नुकसान पहुंचाती है।
मृदा में कैल्शियम की उपस्थिति जड़ों के विकास को प्रोत्साहित करती है। लाल मिट्टी और चूना पत्थर वाली भूमि में रेशा उत्पादन अच्छा देखा गया है।

रोपण सामग्री:

भारत में सिसल फूल नहीं देता, अतः इसका प्रचार मुख्यतः बुलबिल और सकर्स से किया जाता है। एक पौधा 400–800 बुलबिल उत्पन्न कर सकता है। इन्हें फरवरी से अप्रैल तक नर्सरी में लगाया जाता है। "कायिक भ्रूणजनन" तकनीक के प्रयोग से 95% तक पौधों की जीवित रहने की संभावना होती है, जिससे रोपण दर बेहतर होती है।

नर्सरी प्रबंधन:

प्राथमिक और माध्यमिक दो चरणों में नर्सरी तैयार की जाती है। प्राथमिक नर्सरी में पौधों को 10×7 सेमी दूरी पर लगाया जाता है। माध्यमिक नर्सरी में 50×25 सेमी दूरी के साथ फफूंदनाशक उपचार कर

रोपण किया जाता है। हर 11वीं पंक्ति कार्य सुविधा हेतु खाली रखी जाती है।

मुख्य खेत में रोपण:

रोपण से पहले रोपण सामग्री को 30–45 दिन छाया में रखा जा सकता है। गर्मियों में 1 घन फीट गड्ढों में जैविक खाद और चूने के साथ रोपण किया जाता है। दो पंक्ति रोपण विधियाँ अपनाई जाती हैं—कम और उच्च घनत्व वाली। उच्च घनत्व रोपण में 6666 पौधे/हेक्टेयर, जबकि कम घनत्व में 4000 पौधे/हेक्टेयर लगाए जाते हैं।

अंतरवर्ती फसलें और मल्चिंग:

पहले तीन वर्षों में फसल नहीं मिलती, इसलिए अंतरवर्ती फसल जैसे लोबिया, मटर, सफेद मूसली, एलोवेरा या लेमन ग्रास उगाई जा सकती है। मल्चिंग से नमी संरक्षित रहती है और मृदा उर्वरता में सुधार होता है।

खरपतवार नियंत्रण:

पहले 45 दिन अत्यंत महत्वपूर्ण होते हैं। मेटोलाक्लोर (500 ग्राम/हेक्टेयर) से 89.2% तक खरपतवार नियंत्रित किए जा सकते हैं। 3–4 बार निराई जरूरी होती है।

उर्वरक प्रबंधन:

सिफारिश की गई मात्रा 60:30:60 (N\:P\:K) किग्रा/हेक्टेयर है। इसके साथ 20 किग्रा बोरेक्स और 15 किग्रा जिंक सल्फेट प्रति हेक्टेयर देने से फाइबर उत्पादन और पत्तियों की लंबाई में सुधार होता है।

सिंचाई:

सिसल वर्षा पर निर्भर होता है लेकिन ड्रिप सिंचाई से बेहतर परिणाम मिलते हैं। दो सप्ताह के अंतराल पर सिंचाई से पत्तियाँ अधिक लंबी होती हैं। वर्षा ऋतु में जल निकासी जरूरी है।

उत्पादन और संभावनाएँ:

भारत में औसतन 600–800 किग्रा/हेक्टेयर रेशा उत्पादन होता है, लेकिन वैज्ञानिक तरीकों और बेहतर प्रबंधन से यह 2000 किग्रा/हे. या अधिक तक पहुँच सकता है। बढ़ती जैविक उत्पादों की मांग और सस्ते रेशे की आवश्यकता को देखते हुए सिसल की व्यावसायिक खेती किसानों के लिए एक लाभकारी विकल्प बन सकती है। इससे सूखे और अर्ध-शुष्क क्षेत्रों में टिकाऊ कृषि को भी बढ़ावा मिलता है।

रामतिल की खेती कैसे की जाती है: जलवायु, मिट्टी, उन्नत किस्में और बुवाई के टिप्स

रामतिल, जिसे नाइजर बीज (Niger Seed) भी कहा जाता है, एक महत्वपूर्ण तेलीय फसल है। यह फसल सूखे क्षेत्रों में भी अच्छी तरह उगाई जा सकती है और इसके बीजों से तेल निकाला जाता है, जो खाद्य तेल के रूप में उपयोग होता है। रामतिल एक लाभकारी तिलहन फसल है जो कम लागत में अच्छी पैदावार दे सकती है। रामतिल का तेल उच्च गुणवत्ता

वाला होता है और इसका उपयोग खाना पकाने, साबुन बनाने और पेंट बनाने में किया जाता है। रामतिल की खली भोजन और खाद के रूप में उपयोगी होती है। रामतिल की खेती कम पानी वाली होती है, जो इसे सूखे वाले क्षेत्रों के लिए उपयुक्त बनाती है।

रामतिल की खेती के लिए उपयुक्त जलवायु

रामतिल एक उष्णकटिबंधीय फसल है जो गर्म और शुष्क जलवायु में अच्छी तरह से उगती है। इसकी खेती के लिए 20 से 30 डिग्री सेल्सियस तापमान अनुकूल होता है। 35 डिग्री सेल्सियस से अधिक तापमान फूलों को नुकसान पहुंचा सकता है। इस फसल के लिए 500-700 मि.मी. वार्षिक वर्षा उपयुक्त मानी जाती है।

मिट्टी की आवश्यकता

रामतिल विभिन्न प्रकार की मिट्टी में उगाया जा सकता है, लेकिन यह रेतीली दोमट, बलुआही मिट्टी में सबसे अच्छा प्रदर्शन करता है। मिट्टी अच्छी तरह से सूखा और जल निकास वाली होनी चाहिए। भारी मिट्टी, जलभराव वाली मिट्टी और अम्लीय मिट्टी रामतिल की खेती के लिए उपयुक्त नहीं होती है। मिट्टी का पीएच मान 5.5 से 7.5 के बीच होना चाहिए।

भूमि की तैयारी

रामतिल की खेती के लिए भूमि को अच्छी तरह तैयार करना आवश्यक है। इसके लिए खेत को अच्छी तरह जुताई करनी चाहिए और मिट्टी को भुरभुरी बना लेना चाहिए। खेत में गोबर की खाद या कम्पोस्ट डालकर मिट्टी की उर्वरकता बढ़ानी चाहिए। 1-2 बार जुताई के बाद पाटा चलाकर मिट्टी को समतल बना लें।

बुवाई के लिए बीज दर

रामतिल की बुवाई के लिए 4-5 किलोग्राम बीज प्रति हेक्टेयर की दर से पर्याप्त होता है।
उन्नत किस्मों जैसे कि RK-10, RK-202, JNS-9, RCR-317, RCR-18 , Guj. Niger-1, Guj. Niger-2, Paiyur – 1 बीरसा नाईजर – 1 और RKN-502 का उपयोग करना बेहतर होता है।

बुवाई की विधि

- बुवाई का समय: जून-जुलाई महीने में मानसून की पहली बारिश के बाद।
- बुवाई की विधि: बीजों को हाथ से या बुवाई मशीन से बोया जा सकता है।
- बुवाई की गहराई: 2-3 सेंटीमीटर।
- पंक्तियों की दूरी: 30-40 सेंटीमीटर।
- बीजों की दूरी: 2-3 सेंटीमीटर।

खरपतवार नियंत्रण

खरपतवारों को नियंत्रित करने के लिए निराई-गुड़ाई आवश्यक है। रासायनिक खरपतवार नाशकों का भी उपयोग किया जा सकता है, लेकिन सावधानी के साथ।

सिंचाई प्रबंधन

रामतिल को शुरुआती और फूल आने की अवस्था में सिंचाई की आवश्यकता होती है। जलभराव से बचना चाहिए, क्योंकि इससे जड़ सड़न हो सकती है।
सिंचाई का समय और मात्रा मिट्टी की प्रकार और मौसम पर निर्भर करता है।

कटाई

- रामतिल की फसल 90-100 दिनों में कटाई के लिए तैयार हो जाती है।
- जब पत्तियां पीली हो जाएं और फलियां सूखने लगें तो फसल कटाई के लिए तैयार होती है।
- कटाई हाथ से या मशीन से की जा सकती है।
- कटने के बाद, फसल को 2-3 दिनों के लिए धूप में सुखाना चाहिए।
- सूखने के बाद, फलियों को मसलकर बीज अलग कर लें।

लगे हटके
करे हटके

बोल्ड एंड ब्लैक

DIGITRAC
PP43i

37.3 kW श्रेणी
50 HP श्रेणी

अंगूर में लगने वाले प्रमुख रोग लक्षण और प्रबंधन के उपाय

अंगूर में लगने वाले प्रमुख रोग

अंगूर के बाग में कीटों के साथ साथ रोगों का भी प्रकोप होता है। रोगों के कारण अंगूर की उपज में काफी हद तक कमी आती है। अंगूर की बीमारियों मुख्य रूप से मौसम की स्थिति, इनोकुलम (बीमारी का इतिहास) की उपस्थिति और बेलों की संवेदनशीलता पर निर्भर करती है। इसका मतलब है कि एक बीमारी एक साल में विनाशकारी हो सकती है। इस लेख में हम आपको अंगूर में लगने वाले प्रमुख रोग, लक्षण और प्रबंधन के उपाय के बारे में जानकारी देंगे।

डाउन मिल्ड्यू (Downy Mildew): Plasmopara viticola

लक्षण:

रोग से प्रभावित पत्तियों की ऊपरी सतह पर अनियमित, पीले, पारदर्शी धब्बे दिखाई देते हैं। इसके अनुरूप, निचली सतह पर सफेद, पाउडर जैसा फफूंदीयुक्त विकास देखा जाता है। प्रभावित पत्तियाँ पीली होकर भूरी पड़ जाती हैं और सूख जाती हैं। समय से पहले पत्तों का गिरना (defoliation) होता है। कोमल शाखाओं का रुक जाना या बौना रह जाना। तनों पर भूरे और गहरे धंसे हुए धब्बे बनते हैं। बेरी (फलियों) पर सफेद फफूंदी दिखाई देती है, जो बाद में चमड़े जैसी होकर सिकुड़ जाती है। यदि बाद में संक्रमण होता है तो फलों में सड़न दिखाई देती है, लेकिन फल की त्वचा फटती नहीं है।

प्रबंधन:

- इस रोग से रोकथाम के लिए बोर्डो मिश्रण 1% या मेटालेक्सिल + मैंकोजेब 0.4% का छिड़काव करें।
- रोग से प्रभावित भागों को काट कर मिट्टी में दबा दे।

पाउडरी मिल्ड्यू (Powdery Mildew): Uncinula necator

लक्षण

पत्तियों की ऊपरी सतह पर सफेद चूर्ण जैसा फफूंद विकसित होता है। पत्तियों का आकार बिगड़ जाता है और रंग बदल जाता है। तना गहरा भूरा हो जाता है। फूलों पर संक्रमण होने से फूल झड़ जाते हैं और फल कम बनते हैं। यदि शुरुआती अवस्था में बेरी संक्रमित होती है तो वह झड़ जाती है। पुराने फलों पर चूर्ण जैसा विकास साफ दिखाई देता है और संक्रमण के

कारण फल की त्वचा फट जाती है।

प्रबंधन:

इस रोग से बचाव के लिए इनऑर्गेनिक सल्फर 0.25% या किनोमेथियोनेट 0.1% या डाइनोकैप 0.05% का छिड़काव करें।

एन्थ्रेक्नोजGloeosporium ampelophagum

लक्षण:

यह रोग सबसे पहले फलों पर गहरे लाल धब्बों के रूप में दिखाई देता है। बाद में ये धब्बे गोलाकार, धंसे हुए, राख जैसे भूरे हो जाते हैं और उनके चारों ओर गहरे रंग की सीमा बन जाती है, जिससे यह "बर्ड्स-आई रॉट" जैसा प्रतीत होता है।

धब्बों का आकार 1/4 इंच से लेकर फल के आधे हिस्से तक हो सकता है। यह फफूंद तने, टेंड्रिल, पत्तियों की नसों और डंठलों को भी प्रभावित करती है।

युवा तनों पर कई धब्बे दिखाई देते हैं जो आपस में मिलकर तने को घेर लेते हैं और उसका ऊपरी भाग मर जाता है। पत्तियों और डंठलों पर धब्बों के कारण वे मुड़ जाते हैं या विकृत हो जाते हैं।

इन रोगों का प्रमुख प्रभाव अंगूर की उपज और गुणवत्ता पर पड़ता है। विशेषकर यदि रोग का प्रारंभिक अवस्था में पता न लगाया जाए, तो यह पूरी फसल को नुकसान पहुँचा सकता है।

डाउन मिल्ड्यू नम और आद्र्र जलवायु में तेजी से फैलता है जबकि पाउडरी मिल्ड्यू शुष्क और गर्म परिस्थितियों में सक्रिय होता है। बर्ड्स-आई स्पॉट विशेष रूप से गीले मौसम में अधिक फैलता है। समय-समय पर बाग की निगरानी, रोगग्रस्त भागों को काटकर हटाना, रोग प्रतिरोधी किस्मों का चयन करना और उचित छिड़काव कार्यक्रम अपनाना बहुत आवश्यक है।

जैविक विकल्पों में नीम आधारित उत्पाद या ट्राइकोडर्मा जैव फफूंदनाशी का भी उपयोग किया जा सकता है। रासायनिक दवाओं का प्रयोग करते समय उनके अनुशंसित मात्रा और छिड़काव के समय का पालन अवश्य करें, ताकि फसल और पर्यावरण दोनों सुरक्षित रहें।

अमरूद की जापानी रेड डायमंड किस्म: खेती से होगी शानदार कमाई

आजकल देश के किसान पारंपरिक खेती की बजाय विशेष किस्मों की फलों की खेती कर बेहतर मुनाफा कमा रहे हैं। ऐसी ही एक बेहद लोकप्रिय किस्म है जापानी रेड डायमंड अमरूद, जिसकी बाजार में मांग तेजी से बढ़ रही है। इसकी खासियत इसका बेहतरीन स्वाद और मिठास है। इस किस्म के अमरूद की कीमत बाज़ार में 100 से 150 रुपये प्रति किलो तक होती है। देश के कई राज्यों में किसान इसकी सफल खेती करके अच्छा खासा लाभ कमा रहे हैं। आइए जानते हैं रेड डायमंड अमरूद की खेती से जुड़ी सारी जरूरी जानकारी।

उपयुक्त जलवायु और मिट्टी

जलवायु

रेड डायमंड अमरूद की खेती लगभग हर प्रकार की जलवायु में की जा सकती है, लेकिन बेहतर उत्पादन के लिए 10°C से 42°C के बीच का तापमान सबसे उपयुक्त होता है। तापमान 10 डिग्री से नीचे जाने पर भी इसकी उपज पर ज्यादा असर नहीं पड़ता।

मिट्टी

मिट्टी की बात करें तो यह किस्म हर तरह की मिट्टी में उगाई जा सकती है, लेकिन काली या बलुई दोमट मिट्टी में इसके सबसे अच्छे परिणाम मिलते हैं। मिट्टी का पीएच 7 से 8 के बीच होना चाहिए, जिससे उपज में वृद्धि होती है।

पौधों की रोपाई

सबसे पहले पौधों को नर्सरी में तैयार किया जाता है, उसके बाद इन्हें मुख्य खेत में लगाया जाता है। रोपाई के समय पौधों के बीच पर्याप्त दूरी रखना आवश्यक है।

- पौधे से पौधे की दूरी: 6 फीट
- कतार से कतार की दूरी: 8 फीट

साल में दो बार पौधों की छंटाई करनी चाहिए ताकि उनकी बढ़वार बेहतर हो। जब फल चीकू के आकार के हो जाएं, तब उन्हें अखबार या फोम बैग से ढक देना चाहिए। इससे फल सही तरीके से पकते हैं और उन पर दाग-धब्बे नहीं आते।

खाद और सिंचाई प्रबंधन

रेड डायमंड अमरूद की खेती में पोषण प्रबंधन बेहद जरूरी है।

1. जैविक खाद: गोबर की खाद और वर्मी कम्पोस्ट
2. रासायनिक उर्वरक: एनपीके, सल्फर, मैग्नीशियम सल्फेट, कैल्शियम नाइट्रेट और बोरॉन

सिंचाई के लिए ड्रिप सिस्टम सबसे उपयुक्त माना जाता है, क्योंकि यह मिट्टी की नमी को बनाए रखता है और पौधों की जरूरत के अनुसार पानी पहुंचाता है।

रेड डायमंड अमरूद की खेती से कितनी कमाई होती है

रेड डायमंड अमरूद बाहर से आम अमरूद जैसा लगता है, लेकिन इसका स्वाद नाशपाती जैसा मीठा और गूदा तरबूज की तरह लाल होता है।

- बाजार मूल्य: ₹100–₹150 प्रति किलो
- देशी अमरूद की तुलना में कमाई: लगभग तीन गुना अधिक
- खर्च: कम लागत में अधिक मुनाफा

इस किस्म की खेती में लागत अपेक्षाकृत कम होती है, लेकिन बाजार में अच्छी कीमत मिलने के कारण किसान बड़ी कमाई कर सकते हैं।
यदि आप फल की खेती की ओर बढ़ना चाहते हैं तो जापानी रेड डायमंड अमरूद की खेती एक लाभकारी विकल्प हो सकता है। यह न केवल कम खर्चीली है, बल्कि बाजार में इसकी भारी मांग भी है, जिससे किसानों को बेहतर आमदनी मिलती है।

भारत में आम की किस्में

आम भारत की प्रमुख फल फसल है और इसे फलों का राजा माना जाता है। आम का उपयोग इसके विकास के सभी चरणों में किया जाता है – कच्चे और पके दोनों रूपों में। कच्चे आम का उपयोग चटनी, अचार और रस बनाने में होता है। पके आम न केवल सीधे खाने के लिए, बल्कि स्क्वैश, सिरप, नेक्टर, जैम और जेली जैसे कई उत्पादों के निर्माण में भी उपयोग किए जाते हैं। आम की गुठली में 8–10% तक उच्च गुणवत्ता वाला वसा होता है, जिसका उपयोग साबुन बनाने में और कोला के विकल्प के रूप में कन्फेक्शनरी में किया जा सकता है। आज के इस लेख में हम आपको आम की उन्नत किस्मों के बारे में जानकारी देंगे।

आम की उन्नत किस्में

आम की किस्मों की बाते करे तो भारत में लगभग 1000 किस्मों से भी अधिक आम किस्में पाई जाती हैं, यहां आप आम की कुछ खास किस्मों के बारे में जानेंगे जी को अधिक उपज देती हैं।

- मल्लिका – यह नीलम और दशहरी का संकर (हाइब्रिड) है। इसके फल मध्यम आकार के, कैडमियम रंग के और अच्छी गुणवत्ता वाले होते हैं। यह नियमित रूप से फल देने वाली किस्म मानी जाती है।
- अमरपाली – यह दशहरी और नीलम का संकर है। यह एक बौनी और जोरदार बढ़ने वाली किस्म है, जो नियमित और देर से फल देती है। इसकी औसत उपज 16 टन प्रति हेक्टेयर होती है और एक हेक्टेयर में लगभग 1600 पौधे लगाए जा सकते हैं।
- मंजीरा – यह रमानी और नीलम का संकर है। यह अर्ध-बौनी और नियमित रूप से फल देने वाली किस्म है। फल मध्यम आकार के, हल्के पीले रंग के, गूदा रेशारहित, सख्त और स्वाद में मीठे होते हैं।
- रत्ना – यह नीलम और अल्फांसो का संकर है। यह नियमित फल देने वाली किस्म है और स्पंजी टिशू से मुक्त है। इसके फल मध्यम आकार के, उत्कृष्ट गुणवत्ता वाले होते हैं। गूदा गहरा नारंगी, रेशारहित और सख्त होता है तथा घुलनशील ठोस पदार्थ (TSS) 19–21 ब्रिक्स होता है।
- अर्का अरुणा – यह बंगनपल्ली और अल्फांसो का संकर है। यह नियमित फल देने वाली और बौनी किस्म है। प्रति हेक्टेयर लगभग 400 पौधे लगाए जा सकते हैं। इसके फल बड़े आकार के (500–700 ग्राम), आकर्षक रंग वाले होते हैं। गूदा रेशारहित, मीठा (20–22 ब्रिक्स) और गूदे का प्रतिशत 73% होता है। फल स्पंजी टिशू से मुक्त होते हैं।
- अर्का पुनीत – यह अल्फांसो और बंगनपल्ली का संकर है। यह नियमित और भारी उपज देने वाली किस्म है। फल मध्यम आकार (220–250 ग्राम), आकर्षक रंग और लाल आभा लिए होते हैं। गूदा रेशारहित, गूदे का प्रतिशत 70% होता है। फल स्वाद में मीठे (20–22 ब्रिक्स), अच्छी भंडारण क्षमता वाले और प्रसंस्करण के लिए उपयुक्त होते हैं।
- अर्का अनमोल – यह अल्फांसो और जनार्दन पसंद का संकर है। यह अर्ध-बौना पौधा होता है और नियमित रूप से फल देता है। फल स्पंजी टिशू से मुक्त होते हैं और समान रूप से पीले रंग में पकते हैं। इसकी भंडारण क्षमता बहुत अच्छी होती है, जिससे यह निर्यात के लिए उपयुक्त है। इसमें शर्करा और अम्ल का संतुलन उत्कृष्ट होता है। औसतन फलों का वजन 300 ग्राम होता है और गूदा नारंगी रंग का होता है।

Q-मल्लिका आम किस किस्म का संकर है और इसकी विशेषताएँ क्या हैं?

उत्तर: मल्लिका आम, नीलम और दशहरी का संकर (हाइब्रिड) है। इसके फल मध्यम आकार के, कैडमियम रंग के और उच्च गुणवत्ता वाले होते हैं। यह एक नियमित रूप से फल देने वाली किस्म है।

Q-अमरपाली आम की उपज और विशेषताएँ क्या हैं?

उत्तर:अमरपाली आम, दशहरी और नीलम का संकर है। यह बौनी किस्म है और इसकी औसत उपज 16 टन प्रति हेक्टेयर होती है।

Q-रत्ना आम किस रोग से मुक्त होता है?

उत्तर:रत्ना आम, स्पंजी टिशू से मुक्त होता है। यह नीलम और अल्फांसो का संकर है, जिसमें गूदा गहरा नारंगी, रेशारहित और घुलनशील ठोस पदार्थ (TSS) 19–21 ब्रिक्स पाया जाता है।

Q-अर्का अरुणा आम की प्रमुख विशेषताएँ क्या हैं?

उत्तर: अर्का अरुणा, बंगनपल्ली और अल्फांसो का संकर है। यह बौनी किस्म है और इसके फल बड़े (500–700 ग्राम), आकर्षक रंग के, रेशारहित और मीठे (TSS 20–22 ब्रिक्स) होते हैं।

Q-आम के किस भाग से साबुन और कन्फेक्शनरी उत्पाद बनाए जाते हैं?

उत्तर: आम की गुठली से निकलने वाले वसा का

WIDER PLATFORM WITH DOUBLE FOOTSTEP

Enhances operator comfort

उपयोग साबुन और कोला के विकल्प वाले कन्फेक्शनरी उत्पादों में किया जाता है, क्योंकि इसमें 8–10% तक उच्च गुणवत्ता वाला वसा होता है।

ड्रैगन फ्रूट की खेती जानिए पूरी जानकारी

ड्रैगन फ्रूट, जिसे पिटाया या पिताहाया भी कहा जाता है, हाल के वर्षों में भारत में एक तेजी से लोकप्रिय होता फल बन गया है। यह न केवल सेहत के लिए लाभकारी है, बल्कि किसानों के लिए आर्थिक रूप से भी फायदेमंद है। इसमें भरपूर मात्रा में एंटीऑक्सीडेंट, विटामिन सी और फाइबर पाए जाते हैं, जो इसे एक पोषण से भरपूर फल बनाते हैं। यह फल कैक्टस की प्रजाति से संबंध रखता है और इसका मूल स्थान मध्य व दक्षिण अमेरिका है, हालांकि अब यह एशियाई देशों में भी बड़े पैमाने पर उगाया जा रहा है। भारत में इसकी बढ़ती मांग को देखते हुए किसान अब इसकी ओर आकर्षित हो रहे हैं।

ड्रैगन फ्रूट के लिए उपयुक्त जलवायु

ड्रैगन फ्रूट की खेती के लिए उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय क्षेत्र सबसे बेहतर माने जाते हैं। यह पौधा गर्म और शुष्क वातावरण में अच्छी तरह पनपता है। इसके लिए आदर्श तापमान 20°C से 30°C के बीच होना चाहिए। यह हल्की ठंड को झेल सकता है, लेकिन पाला इसे नुकसान पहुंचा सकता है। अच्छी वृद्धि के लिए इसे प्रतिदिन 6–8 घंटे की धूप मिलना जरूरी है।

कौन-सी मिट्टी सबसे उपयुक्त है?

ड्रैगन फ्रूट के लिए ऐसी मिट्टी जरूरी है जिसमें पानी का निकास अच्छा हो। रेतीली दोमट मिट्टी जिसमें पीएच स्तर 5.5 से 7 के बीच हो, सबसे उपयुक्त मानी जाती है। यह एक कैक्टस पौधा होने के कारण जलभराव को सहन नहीं कर पाता और इससे जड़ों के सड़ने का खतरा रहता है। इसलिए मिट्टी को हल्का और हवादार रखना चाहिए।

भूमि की तैयारी कैसे करें?

खेती से पहले खेत की गहरी जुताई करनी चाहिए और उसमें से खरपतवार, पत्थर आदि हटा देने चाहिए। जमीन को समतल बनाकर ट्रीलिस सिस्टम (खंभे और तार) तैयार करना चाहिए क्योंकि ड्रैगन फ्रूट की बेल को सहारे की जरूरत होती है। आमतौर पर खंभे बांस या सीमेंट से बनाए जाते हैं।

ड्रैगन फ्रूट की प्रमुख किस्में

1. हाइलोसेरियस उंडाटस (Hylocereus undatus) – सफेद गूदा और गुलाबी छिलका।
2. हाइलोसेरियस कोस्टारिसेंसिस (Hylocereus costaricensis) – लाल गूदा और गुलाबी छिलका।
3. हाइलोसेरियस मेगालान्थस (Hylocereus megalanthus) – सफेद गूदा और पीला छिलका।

किस्म का चुनाव स्थानीय जलवायु और बाजार की मांग को ध्यान में रखकर करना चाहिए। भारत में आमतौर पर हाइलोसेरियस उंडाटस की खेती की जाती है।

बीज या कटिंग – कौन-सा बेहतर?

हालांकि बीज से भी पौधे उगाए जा सकते हैं, लेकिन यह प्रक्रिया लंबी होती है। आमतौर पर किसान कटिंग विधि का उपयोग करते हैं क्योंकि इससे पौधे 12 से 18 महीनों में फल देना शुरू कर देते हैं, जबकि बीज से उगाए गए पौधों को फल देने में 5–6 साल लग जाते हैं।

कटिंग से पौधे कैसे लगाएं?

स्वस्थ पौधे की शाखा से 20-25 सेमी लंबी कटिंग ली जाती है, जिसे कुछ दिन छाया में सुखाकर मिट्टी में लगाया जाता है। पहले पॉलीबैग में उगाकर बाद में खेत में रोपण करना एक अच्छा तरीका है। ट्रीलिस सिस्टम में एक खंभे के चारों ओर 3-4 पौधे लगाए जाते हैं और पौधों के बीच 2-3 मीटर की दूरी रखी जाती है।

खाद और उर्वरक प्रबंधन

- जैविक खाद: प्रति हेक्टेयर 10-12 टन सड़ी हुई गोबर की खाद डालें।
- रासायनिक उर्वरक: बुवाई के समय प्रति पौधा 40-60 ग्राम नाइट्रोजन, 50-80 ग्राम फॉस्फोरस और 50-70 ग्राम पोटैशियम दें। फलन के समय अतिरिक्त खाद देना जरूरी होता है।

सिंचाई व्यवस्था

ड्रैगन फ्रूट को ज्यादा पानी की जरूरत नहीं होती, लेकिन मिट्टी में थोड़ी नमी बनी रहनी चाहिए। गर्मियों में 10–15 दिन के अंतराल पर सिंचाई करें, जबकि बरसात के मौसम में सिंचाई की जरूरत कम होती है। ड्रिप इरिगेशन इस फसल के लिए सबसे उपयुक्त है क्योंकि इससे पानी की बचत होती है और पौधों को नमी भी बराबर मिलती रहती है।

फल कब आते हैं?

कटिंग से तैयार पौधे एक से डेढ़ साल में फल देना शुरू कर देते हैं और हर साल 4 से 6 महीने तक फल देते हैं। बीज से उगाए गए पौधों में यह समय 5-6 साल तक हो सकता है।

तुड़ाई और भंडारण

फूल आने के 30–50 दिनों के भीतर फल पककर तैयार हो जाते हैं। जब छिलका पूरी तरह से रंगीन और चमकदार हो जाए, तभी तुड़ाई करें।
सुबह या शाम के समय तुड़ाई करना बेहतर होता है। तुड़ाई के बाद फलों को छाया में सुखाकर पैकिंग की जाती है। भंडारण के लिए 8°C से 10°C का तापमान उपयुक्त होता है, जिससे फल 2–3 हफ्तों तक ताजा बने रहते हैं।

निष्कर्ष

ड्रैगन फ्रूट की खेती न केवल मुनाफे का साधन है बल्कि यह किसानों को जलवायु बदलाव और पारंपरिक खेती की अनिश्चितताओं से उबरने का अवसर भी देती है।
यह एक पौष्टिक, लाभदायक और टिकाऊ फसल है, जिसे भारत में खेती की विविधता के रूप में अपनाया जा सकता है।

एग्री किंग 20-55: किर्लोस्कर इंजन में सबसे टॉप ट्रैक्टर

जानें, एग्री किंग 20-55 ट्रैक्टर की कीमत, स्पेसिफिकेशन और फीचर

एग्रीकिंग एक प्रमुख भारतीय ट्रैक्टर निर्माता ब्रांड है, जो 2010 से अपनी सेवाएं प्रदान कर रही है। कंपनी का हेड ऑफिस चंडीगढ़ में स्थिति है जबकि निर्माण फैक्ट्री हिमाचल प्रदेश के सोलन (नालगढ़) में मौजूद है। एग्रीकिंग किफायती और टिकाऊ ट्रैक्टर बनाने के लिए जानी जाती है। वर्तमान में किसान एग्रीकिंग के ट्रैक्टर्स को खरीदना काफी पसंद कर रहे हैं। एग्रीकिंग किसानो को सस्ती कीमतों पर ट्रैक्टर उपलब्ध कराती है, जिसकी वजह से इसकी लोकप्रियता दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। मेरीखेती के इस लेख में आज हम एग्रीकिंग कंपनी के एग्रीकिंग 20-55 किर्लोस्कर इंजन ट्रैक्टर से जुड़े सभी महत्वपूर्ण पहलुओं जैसे इंजन क्षमता, फीचर्स, स्पेसिफिकेशन और कीमत के बारे में जानेंगे।

एग्रीकिंग 20-55 ट्रैक्टर की इंजन क्षमता और प्रदर्शन

एग्रीकिंग 20-55 ट्रैक्टर में कंपनी 49 एचपी की शक्ति का इंजन प्रदान करता है, जिसकी मदद से कृषि संबंधित सभी महत्वपूर्ण कार्यों को किसान काफी आसानी से पूरा कर सकते हैं। साथ ही, अगर हम इसकी इंजन सीसी की बात करें तो एग्रीकिंग 20-55 ट्रैक्टर में 3120 सीसी की इंजन क्षमता है। बेहतर सीसी क्षमता की वजह से किसान कृषि के छोटे और बड़े दोनों तरह के कार्यों को कम समय में बड़ी आसानी से पूरा कर सकते हैं। यह 2200 आरपीएम पर कार्य करता है। साथ ही, यह 188 NM की टॉर्क प्रदान करता है। इस ट्रैक्टर में आपको ताकत, माइलेज और बहुउपयोगिता तीनों चीजें देखने को मिलती हैं। एग्रीकिंग ने इस ट्रैक्टर को किसानों की जरूरतों को ध्यान में रखकर तैयार किया है।

एग्री किंग 20-55 ट्रैक्टर के स्पेसिफिकेशन

आधुनिक तकनीक से लैश एग्री किंग 20-55 ट्रैक्टर में आपको आराम और ताकत दोनों का बेहतरीन संगम देखने को मिलता है। एग्री किंग 20-55 ट्रैक्टर किसानों के लिए एक फायदे का विकल्प है। क्योंकि इसमें काफी शानदार स्पेसिफिकेशन प्रदान किए गए हैं। आइए इसमें दिए गए स्पेसिफिकेशन के बारे में जानते हैं :-

एग्री किंग 20-55 ट्रैक्टर में आपको Water Cooled सिस्टम और 3 Stage Oil Bath Type / Dry Type एयर फिल्टर प्रदान किया गया है। जो इंजन तक साफ हवा और ज्यादा समय तक शानदार प्रदर्शन को सुनिश्चित करता है।

एग्री किंग 20-55 ट्रैक्टर में 16 Forward + 8 Reverse ऑप्शन वाला गियरबॉक्स मिलता है, जो खेत में ऑपरेटर को आसानी से स्पीड और लोड कंट्रोल करने में मदद करता है।

एग्री किंग 20-55 ट्रैक्टर में Hydrostatic Power Steering दी गई है, जिससे लंबे समय तक काम करने पर भी किसान को थकान कम होती है और काम आसान हो जाता है।

एग्री किंग 20-55 ट्रैक्टर बड़े फ्यूल टैंक के साथ आता है, जिससे खेत में बिना रुके लंबे समय तक काम किया जा सकता है।

एग्री किंग 20-55 ट्रैक्टर में 1800 kg की दमदार लिफ्टिंग कैपेसिटी है, जो हेवी इम्प्लीमेंट्स को आसानी से संभालने में सक्षम बनाती है।

एग्री किंग 20-55 ट्रैक्टर में 2WD व्हील ड्राइव वेरिएंट उपलब्ध कराया गया है, जो कम ईंधन खर्च में भरोसेमंद और कुशल संचालन देता है।

एग्री किंग 20-55 ट्रैक्टर में Double Clutch सिस्टम दिया गया है, जो फील्ड में काम करते समय गियर बदलने को आसान बनाता है और ट्रैक्टर पर बेहतर कंट्रोल देता है।

एग्री किंग 20-55 ट्रैक्टर में प्रदान किए गए Oil Immersed Disc Brakes की मदद से हर तरह की सड़कों और खेतों पर सुरक्षित और बेहतर नियंत्रण में काफी मदद मिलती है।

एग्रीकिंग 20-25 ट्रैक्टर की कीमत

भारतीय वाहन बाजार में एग्रीकिंग 20-55 ट्रैक्टर की कीमत करीब ₹ 6.40 से ₹ 6.66 लाख तक के बीच में निर्धारित की गई है। भारतीय किसानों के लिए यह कीमत काफी किफायती और उनके बजट के अनुरूप है। एग्रीकिंग कंपनी ने किसानों की कृषि आवश्यकताओं और बजट को ध्यान में रखकर ही यह कीमत तय की है। दमदार प्रदर्शन और किफायती कीमत के बल पर ही एग्री किंग 20-55 ट्रैक्टर ने कम समय में किसानों के बीच अपनी अलग जगह बनाई है। कुल मिलाकर, एग्रीकिंग 20-25 ट्रैक्टर काफी किफायती और शानदार प्रदर्शन देने वाला ट्रैक्टर है। इसको खरीदना किसान के लिए फायदे का सौदा साबित होगा।

महिंद्रा अर्जुन 555 डीआई: 49.3 एचपी श्रेणी में शक्तिशाली ट्रैक्टर

महिंद्रा अर्जुन 555 डीआई ट्रैक्टर: जानें, कीमत, स्पेसिफिकेशन और फीचर

भारतीय किसानों के बीच महिंद्रा ट्रैक्टर अपनी मजबूती, टिकाऊपन और शानदार प्रदर्शन के लिए

जाने जाते हैं। 49.3 HP श्रेणी में आने वाला महिंद्रा अर्जुन 555 DI ट्रैक्टर खेती के विभिन्न कार्यों के लिए एक बेहतरीन विकल्प माना जाता है। यह ट्रैक्टर जुताई, बुवाई, रोटावेट र, थ्रेशर और ट्रॉली जैसे कार्यों को आसानी से करने की क्षमता रखता है। इसका दमदार इंजन, मजबूत हाइड्रोलिक सिस्टम और आधुनिक फीचर्स इसे मध्यम और बड़े किसानों के लिए उपयुक्त बनाते हैं।

महिंद्रा अर्जुन 555 DI इंजन

महिंद्रा अर्जुन 555 डीआई ट्रैक्टर में 4 सिलेंडर वाला शक्तिशाली इंजन दिया गया है, जो 49.3 HP की श्रेणी में आता है। इसका इंजन 3054 सीसी क्षमता का है, जो खेतों में भारी कार्यों को आसानी से करने के लिए पर्याप्त ताकत प्रदान करता है। यह इंजन 2100 RPM पर कार्य करता है और 187 Nm का अधिकतम टॉर्क उत्पन्न करता है, जिससे ट्रैक्टर को बेहतर खींचने की क्षमता मिलती है। इसमें 8″ Dry Type Dual Element एयर फिल्टर दिया गया है, जो इंजन को धूल और मिट्टी से सुरक्षित रखता है। इसके अलावा, इस ट्रैक्टर में 44.9 HP की PTO पावर मिलती है, जिससे विभिन्न कृषि उपकरणों को आसानी से चलाया जा सकता है। बेहतर तापमान नियंत्रण के लिए इसमें Water Cooled कूलिंग सिस्टम दिया गया है, जो लंबे समय तक काम करने के दौरान इंजन को ठंडा बनाए रखता है।

महिंद्रा अर्जुन 555 DI ट्रांसमिशन (गियरबॉक्स)

इस ट्रैक्टर का ट्रांसमिशन सिस्टम उन्नत तकनीक से लैस है। इसमें FCM (Optional Partial Synchromesh) ट्रांसमिशन दिया गया है, जो गियर बदलने को आसान और स्मूथ बनाता है। इसमें Single या Dual क्लच का विकल्प मिलता है, जिससे किसान अपनी जरूरत के अनुसार चयन कर सकते हैं। ट्रैक्टर में 8 Forward और 2 Reverse गियर का गियरबॉक्स दिया गया है, जो विभिन्न कार्यों के लिए उपयुक्त स्पीड प्रदान करता है। इसकी फॉरवर्ड स्पीड 1.5 से 32.0 किमी/घंटा तक और रिवर्स स्पीड 1.5 से 12.0 किमी/घंटा तक है, जिससे खेत और सड़क दोनों पर बेहतर नियंत्रण मिलता है।

महिंद्रा अर्जुन 555 DI ब्रेक

महिंद्रा अर्जुन 555 DI ट्रैक्टर में Oil Immersed Brakes दिए गए हैं, जो सुरक्षित और प्रभावी ब्रेकिंग प्रदान करते हैं। यह ब्रेक सिस्टम तेल में डूबा होने के कारण कम घिसता है और लंबे समय तक टिकाऊ रहता है। इससे ट्रैक्टर को कठिन परिस्थितियों में भी बेहतर नियंत्रण मिलता है।

महिंद्रा अर्जुन 555 DI स्टीयरिंग

इस ट्रैक्टर में Power Steering के साथ Mechanical Steering का विकल्प भी दिया गया है। Power Steering से ट्रैक्टर को चलाना और मोड़ना आसान हो जाता है, जिससे चालक को कम मेहनत करनी पड़ती है। इसमें Single Drop Arm स्टीयरिंग एडजस्टमेंट दिया गया है, जो बेहतर नियंत्रण प्रदान करता है।

महिंद्रा अर्जुन 555 DI पॉवर टेक ऑफ (PTO)

इस ट्रैक्टर में 6 Splines वाला PTO दिया गया है, जिसकी स्पीड 540 RPM है। यह PTO सिस्टम रोटावेटर, थ्रेशर, रीपर और अन्य कृषि उपकरणों को प्रभावी ढंग से चलाने में मदद करता है।

महिंद्रा अर्जुन 555 DI फ्यूल कैपेसिटी

महिंद्रा अर्जुन 555 DI ट्रैक्टर में 65 लीटर की बड़ी फ्यूल टैंक क्षमता दी गई है, जिससे किसान लंबे समय तक बिना बार-बार ईंधन भरवाए काम कर सकते हैं। इससे समय और श्रम दोनों की बचत होती है।

महिंद्रा अर्जुन 555 DI डायमेंशन और वजन

इस ट्रैक्टर का वजन लगभग 2350 किलोग्राम है, जो इसे खेतों में बेहतर स्थिरता और संतुलन प्रदान करता है। इसका व्हीलबेस 2125 मिमी है, जिससे ट्रैक्टर भारी उपकरणों के साथ भी अच्छा प्रदर्शन करता है। इसकी कुल लंबाई 3480 मिमी और चौड़ाई 1956 मिमी है, जो इसे मजबूत और संतुलित बनाती है। इसके अलावा इसमें 445 मिमी का ग्राउंड क्लीयरेंस दिया गया है, जिससे यह ऊबड़-खाबड़ खेतों में भी आसानी से चल सकता है।

महिंद्रा अर्जुन 555 DI हाइड्रोलिक्स (लिफ्टिंग कैपेसिटी)

महिंद्रा अर्जुन 555 DI ट्रैक्टर में 1800 किलोग्राम की लिफ्टिंग क्षमता दी गई है, जिससे यह भारी कृषि उपकरणों को आसानी से उठा और चला सकता है। इसमें ADDC (Automatic Depth and Draft Control) हाइड्रोलिक सिस्टम दिया गया है, जो खेत में उपकरणों की गहराई और संतुलन को नियंत्रित करता है।

महिंद्रा अर्जुन 555 DI टायर साइज

इस ट्रैक्टर में फ्रंट टायर 6.00 × 16 या 7.5 × 16 के विकल्प के साथ आते हैं, जबकि रियर टायर 14.9 × 28 या 16.9 × 28 के विकल्प में उपलब्ध हैं। बड़े रियर टायर ट्रैक्टर को बेहतर ट्रैक्शन प्रदान करते हैं, जिससे भारी कार्यों के दौरान भी ट्रैक्टर आसानी से चलता है।

महिंद्रा अर्जुन 555 DI कीमत और वारंटी

महिंद्रा अर्जुन 555 DI ट्रैक्टर की एक्स-शोरूम कीमत लगभग ₹8.31 लाख से ₹8.64 लाख के बीच है। यह कीमत राज्य और डीलर के अनुसार अलग हो सकती है। कंपनी इस ट्रैक्टर पर 6000 घंटे या 6 साल की लंबी वारंटी भी प्रदान करती है, जो किसानों के लिए भरोसे का बड़ा संकेत है।

कुल मिलाकर महिंद्रा अर्जुन 555 DI ट्रैक्टर 49.3 HP श्रेणी में एक मजबूत, भरोसेमंद और आधुनिक ट्रैक्टर है। इसमें दमदार इंजन, उन्नत ट्रांसमिशन, उच्च लिफ्टिंग क्षमता और आरामदायक संचालन जैसी कई खूबियां मिलती हैं। यह ट्रैक्टर खेती के विभिन्न कार्यों के साथ-साथ परिवहन के लिए भी उपयुक्त है। जो किसान एक शक्तिशाली और टिकाऊ ट्रैक्टर की तलाश में हैं, उनके लिए महिंद्रा अर्जुन 555 DI एक बेहतरीन विकल्प साबित हो सकता है।

प्रीत 987 कंबाइन हार्वेस्टर: गेहूं की कटाई के लिए बेहतरीन मशीन

जानें, प्रीत 987 कंबाइन हार्वेस्टर की कीमत, स्पेसिफिकेशन और फीचर

प्रीत ब्रांड का 987 कंबाइन हार्वेस्टर एक शक्तिशाली और बहुउद्देश्यीय मशीन है, जिसे खासतौर पर भारतीय किसानों की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए डिजाइन किया गया है। 101 HP की पावर के साथ आने वाला यह कंबाइन सोयाबीन, धान, गेहूँ और सरसों जैसी विभिन्न फसलों की कटाई और थ्रेशिंग के लिए उपयुक्त है। इसका 14 फीट (4.3 मीटर) चौड़ा कटर बार खेत में तेजी से काम करने में मदद करता है, जिससे समय और लागत दोनों की बचत होती है।

स्वचालित (सेल्फ-प्रोपेल्ड) सिस्टम के कारण यह मशीन खेतों में आसानी से संचालित होती है और बड़े क्षेत्रों में बेहतर उत्पादकता प्रदान करती है।

प्रीत 987 कंबाइन हार्वेस्टर इंजन और प्रदर्शन

प्रीत 987 कंबाइन में PCH-1049 मॉडल का शक्तिशाली इंजन दिया गया है, जो 2200 RPM पर 101 HP की ताकत उत्पन्न करता है। इसमें 6 सिलेंडर लगे हैं, जो इसे लगातार और भारी कार्यों के लिए सक्षम बनाते हैं। इंजन में कॉम्बिनेशन ड्राई और वेट टाइप एयर क्लीनर दिया गया है, जो धूल भरे वातावरण में भी इंजन की कार्यक्षमता बनाए रखता है। साथ ही वाटर कूल्ड सिस्टम इंजन को लंबे समय तक ठंडा रखता है, जिससे मशीन की लाइफ बढ़ती है और ओवरहीटिंग की समस्या कम होती है।

प्रीत 987 कंबाइन हार्वेस्टर क्लच और ट्रांसमिशन सिस्टम

इस कंबाइन में सिंगल, हैवी ड्यूटी ड्राई टाइप क्लच दिया गया है, जिसका डायमीटर 310 मिमी है। यह क्लच सिस्टम स्मूद पावर ट्रांसमिशन सुनिश्चित करता है और लंबे समय तक टिकाऊ रहता है। ट्रांसमिशन की बात करें तो इसमें 3 फॉरवर्ड + 1 रिवर्स और 4 फॉरवर्ड + 1 रिवर्स गियर विकल्प दिए गए हैं, जिससे अलग-अलग फील्ड कंडीशन में मशीन को आसानी से नियंत्रित किया जा सकता है। इसकी गियर स्पीड 1.6 किमी/घंटा से लेकर 22 किमी/घंटा तक जाती है, जो इसे धीमी और तेज दोनों तरह के कार्यों के लिए उपयुक्त बनाती है।

प्रीत 987 कंबाइन हार्वेस्टर कटर बार और कटाई क्षमता

प्रीत 987 कंबाइन का कटर बार 14 फीट (4.3 मीटर) चौड़ा है, जो गेहूँ, धान और अन्य फसलों की तेज कटाई सुनिश्चित करता है। इसमें 57 ब्लेड और 57 गार्ड लगे हैं, जो साफ और सटीक कटाई में मदद करते हैं। कटाई की ऊँचाई 65 मिमी से 1275 मिमी तक एडजस्ट की जा सकती है, जिससे विभिन्न फसलों के अनुसार मशीन को सेट किया जा सकता है। रील की स्पीड 915 RPM है, जो फसल को प्रभावी ढंग से कटिंग यूनिट तक पहुंचाती है। मक्का और सूरजमुखी के लिए इसमें अलग कटर विकल्प भी दिए गए हैं, जिनकी चौड़ाई 10.25 से 11.25 फीट तक है और 6 से 7 पंक्तियों में काम कर सकते हैं।

प्रीत 987 हार्वेस्टर थ्रेशिंग और सफाई प्रणाली

इस कंबाइन में उन्नत थ्रेशिंग मैकेनिज्म दिया गया है, जिसमें अलग-अलग फसलों के लिए रास्प बार और पेग टूथ ड्रम का उपयोग किया जाता है। थ्रेशर ड्रम का डायमीटर 605 मिमी है और इसकी स्पीड 540 से 1200 RPM तक एडजस्ट की जा सकती है। कोनकेव क्लियरेंस भी मैकेनिकल तरीके से एडजस्ट होता है, जिससे फसल के अनुसार बेहतर थ्रेशिंग मिलती है। स्ट्रॉ वॉकर सिस्टम में 5 स्टेप्स दिए गए हैं, जो भूसे को अलग करने में मदद करते हैं। सफाई के लिए इसमें 2.42 m^2 ऊपरी और 1.77 m^2 निचली छलनी दी गई है, जो अनाज को साफ और उच्च गुणवत्ता में संग्रहित करती है।

प्रीत 987 कंबाइन हार्वेस्टर क्षमता और टैंक

प्रीत 987 कंबाइन में 2.5 m^2 की अनाज टंकी दी गई है, जो अधिक मात्रा में अनाज संग्रह करने में सक्षम है। इसका 365 लीटर का बड़ा ईंधन टैंक लंबे समय तक बिना रुके काम करने की सुविधा देता है। बैटरी सिस्टम में 2 बैटरियां दी गई हैं, जिनकी क्षमता 12V, 100Ah है, जो मशीन के सभी इलेक्ट्रिकल सिस्टम को स्थिर रूप से चलाती हैं।

प्रीत 987 कंबाइन हार्वेस्टर टायर और आयाम

इस कंबाइन में फ्रंट टायर 18.4/15 x 30 साइज के दिए गए हैं, जिनकी प्लाई रेटिंग 12 PR / 14 PR

EICHER 480
45 HP रेंज
हर काम के लिए तैयार!
EICHER
480
पावरफुल इंजन
हाइड्रोमैटिक हैड्रॉलिक्स
साइड शिफ़्ट गियरबॉक्स
मल्टी स्पीड / रिवर्स PTO
मल्टी डिस्क ऑइल ब्रेक

है, जबकि रियर टायर 9.00 x 16 साइज के 16 PR के हैं। इसके आयाम की बात करें तो कार्य के दौरान इसकी लंबाई 8370 मिमी और परिवहन के दौरान 12280 मिमी होती है। चौड़ाई कार्य के समय 4665 मिमी और परिवहन में 3045 मिमी रहती है, जबकि ऊंचाई 3800 मिमी है। इसका ग्राउंड क्लीयरेंस 340 मिमी है और कुल वजन लगभग 8580 किलोग्राम है, जो इसे मजबूत और स्थिर बनाता है।

प्रीत 987 कंबाइन हार्वेस्टर की कीमत?

प्रीत 987 कंबाइन हार्वेस्टर की कीमत लगभग ₹23.50 लाख है। इस कीमत में यह मशीन अपने शक्तिशाली इंजन, उन्नत फीचर्स और मल्टी-क्रॉप उपयोगिता के कारण किसानों के लिए एक बेहतरीन निवेश साबित होती है।

स्वराज 744 एक्स टी VS स्वराज 744 एफई: कौन सा ट्रैक्टर है किसानों के लिए बेहतर?

स्वराज 744 एक्स टी VS स्वराज 744 एफई: जानें, कीमत, स्पेसिफिकेशन और फीचर

भारतीय किसानों के बीच स्वराज ट्रैक्टर्स अपनी मजबूती, भरोसे और किफायती कीमत के लिए जाने जाते हैं। इसी कड़ी में स्वराज 744 एक्स टी और स्वराज 744 एफई दो बेहद लोकप्रिय मॉडल हैं, जो मध्यम श्रेणी के किसानों के लिए बेहतरीन विकल्प माने जाते हैं। हालांकि दोनों ट्रैक्टर कई मामलों में समान दिखते हैं, लेकिन उनकी पावर, फीचर्स और उपयोग के आधार पर कुछ महत्वपूर्ण अंतर हैं, जो सही चुनाव करने में अहम भूमिका निभाते हैं।

स्वराज 744 एक्स टी VS स्वराज 744 एफई इंजन और पावर का अंतर

अगर इंजन और पावर की बात करें, तो स्वराज 744 एक्स टी थोड़ा ज्यादा शक्तिशाली साबित होता है। इसमें 50 HP का इंजन दिया गया है, जो 3478 सीसी क्षमता के साथ आता है, जबकि स्वराज 744 एफई 47 HP और 3307 सीसी इंजन के साथ आता है। दोनों ट्रैक्टर 3 सिलेंडर और 2000 RPM पर कार्य करते हैं, लेकिन स्वराज 744 एक्स टी मॉडल में ज्यादा पावर और 44 HP PTO मिलता है, जो भारी उपकरणों के लिए बेहतर है। वहीं स्वराज 744 एफई में 41.8 HP PTO है, जो सामान्य कृषि कार्यों के लिए पर्याप्त है।

स्वराज 744 एक्स टी VS स्वराज 744 एफई ट्रांसमिशन और गियर सिस्टम

ट्रांसमिशन के मामले में दोनों ट्रैक्टर 8 फॉरवर्ड और 2 रिवर्स गियर के साथ आते हैं, लेकिन स्वराज 744 एक्स टी में स्लाइडिंग मेश/PCM ट्रांसमिशन के साथ IPTO का विकल्प मिलता है, जो इसे ज्यादा एडवांस बनाता है। इसके विपरीत, स्वराज 744 एफई में सिंगल या ड्यूल क्लच का विकल्प है, जो साधारण और भरोसेमंद उपयोग के लिए उपयुक्त है। स्वराज 744 एक्स टी में ज्यादा एडवांस फीचर्स होने के कारण यह आधुनिक खेती के लिए बेहतर माना जाता है।

स्वराज 744 एक्स टी VS स्वराज 744 एफई ब्रेक और स्टीयरिंग में अंतर

ब्रेकिंग सिस्टम में स्वराज 744 एक्स टी स्टैंडर्ड रूप से ऑयल इमर्स्ड ब्रेक के साथ आता है, जबकि स्वराज 744 एफई में यह ऑप्शनल है। इससे एक्स टीमॉडल ज्यादा सुरक्षित और कम मेंटेनेंस वाला बनता है। स्टीयरिंग की बात करें तो एक्स टीमें पावर स्टीयरिंग अधिक सामान्य रूप से उपलब्ध है, जबकि एफईमें मैकेनिकल स्टीयरिंग बेस मॉडल में मिलता है और पावर स्टीयरिंग ऑप्शनल है। इसलिए एक्स टीचलाने में ज्यादा आरामदायक और आसान है, खासकर लंबे समय तक काम के दौरान।

स्वराज 744 एक्स टी VS स्वराज 744 एफई PTO और कार्य क्षमता

दोनों ट्रैक्टर मल्टी-स्पीड PTO (540/1000 RPM) के साथ आते हैं, लेकिन स्वराज 744 एक्स टी में ज्यादा PTO पावर होने के कारण यह रोटावेटर, थ्रेशर और भारी उपकरणों के साथ बेहतर प्रदर्शन करता है। वहीं स्वराज 744 एफईछोटे और मध्यम कृषि कार्यों जैसे बुवाई, स्प्रेइंग और हल्की जुताई के लिए अधिक उपयुक्त है।

स्वराज 744 एक्स टी VS स्वराज 744 एफई फ्यूल कैपेसिटी और कार्य समय

फ्यूल टैंक क्षमता दोनों ट्रैक्टरों में लगभग समान (56 लीटर) है, जिससे दोनों लंबे समय तक बिना रुके काम कर सकते हैं। हालांकि एक्स टीकी ज्यादा पावर के कारण ईंधन खपत थोड़ी अधिक हो सकती है, लेकिन यह ज्यादा आउटपुट भी देता है।

स्वराज 744 एक्स टी VS स्वराज 744 एफई डायमेंशन, वजन और स्थिरता

स्वराज 744 एक्स टी का वजन लगभग 2235 किलोग्राम है, जो स्वराज 744 एफई (2060 किग्रा) से ज्यादा है। ज्यादा वजन के कारण एक्स टीट्रैक्टर में बेहतर ग्रिप और स्थिरता मिलती है, खासकर भारी उपकरणों और कठिन मिट्टी में काम करते समय। वहीं एफई हल्का होने के कारण छोटे खेतों और सामान्य उपयोग के लिए ज्यादा सुविधाजनक रहता है।

स्वराज 744 एक्स टी VS स्वराज 744 एफई हाइड्रोलिक्स और लिफ्टिंग क्षमता

दोनों ट्रैक्टरों में 2000 किलोग्राम की लिफ्टिंग क्षमता दी गई है, जो भारी कृषि उपकरणों के लिए पर्याप्त है। हालांकि एक्स टीमें बेहतर हाइड्रोलिक सिस्टम और कैटेगरी I & II लिंकज के कारण उपकरणों के साथ इसकी संगतता और कार्य क्षमता थोड़ी बेहतर हो जाती है।

स्वराज 744 एक्स टी VS स्वराज 744 एफई टायर और ट्रैक्शन

टायर साइज दोनों ट्रैक्टरों में लगभग समान है फ्रंट 6.00 x 16 / 7.50 x 16, और रियर 13.6 x 28 / 14.9 X 28 लेकिन एक्स टीका ज्यादा वजन और पावर इसे बेहतर ट्रैक्शन प्रदान करता है। इससे यह गीली या भारी मिट्टी में भी आसानी से काम कर सकता है, जबकि एफईसामान्य परिस्थितियों में बेहतर प्रदर्शन देता है।

स्वराज 744 एक्स टी VS स्वराज 744 एफई कीमत और वारंटी

कीमत के मामले में स्वराज 744 एफई थोड़ा सस्ता है ₹7.42–7.73 लाख, जबकि स्वराज 744 एक्स टी की कीमत ₹7.52–7.82 लाख तक जाती है। खास बात यह है कि स्वराज 744 एफई और स्वराज 744 एक्स टी में 6 साल या 6000 घंटे तक की लंबी वारंटी मिलती है ।

कौन सा ट्रैक्टर बेहतर?

अगर आप एक ऐसा ट्रैक्टर चाहते हैं जो ज्यादा पावरफुल, एडवांस फीचर्स से लैस और भारी कामों के लिए उपयुक्त हो, तो स्व राज 744 एक्स टीआपके

लिए बेहतर विकल्प है। यह बड़े खेतों और मल्टी-इम्प्लीमेंट उपयोग के लिए आदर्श है। वहीं, यदि आपका बजट थोड़ा कम है और आप सामान्य खेती, हल्के से मध्यम कार्यों के लिए ट्रैक्टर चाहते हैं, तो स्वराज 744 एफईएक्स किफायती, भरोसेमंद और संतुलित विकल्प साबित होता है।

भारत के टॉप 4 थ्रेशर - जानें, थ्रेशर की कीमत, फीचर्स और स्पेसिफिकेशन्स

भारतीय किसानों के बीच लोकप्रिय टॉप 4 थ्रेशर मशीन की जानकारी

आज के समय में कृषि क्षेत्र तेजी से आधुनिक तकनीकों की ओर बढ़ रहा है, और थ्रेशर मशीनें इस बदलाव का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन चुकी हैं। पहले जहां फसल की मड़ाई (Threshing) में किसानों को अधिक समय और श्रम लगाना पड़ता था, वहीं अब थ्रेशर मशीनों के उपयोग से यह काम बहुत तेजी और दक्षता के साथ पूरा हो जाता है। थ्रेशर का मुख्य कार्य फसल से अनाज को अलग करना होता है, जिससे उत्पादन प्रक्रिया आसान और समय की बचत होती है। विभिन्न कंपनियों द्वारा अलग-अलग जरूरतों के अनुसार थ्रेशर मॉडल तैयार किए जा रहे हैं, जिनमें क्षमता, डिजाइन और उपयोगिता के आधार पर अंतर होता है। मेरीखेती के इस लेख में आज हम आपको भारतीय किसानों के बीच लोकप्रिय और विश्वसनीय 4 थ्रेशर मशीनों के बारे में जानकारी प्रदान करेंगे। अगर आप एक किसान हैं और थ्रेशर खरीदना चाहते हैं, तो यह लेख आपके लिए काफी फायदेमंद साबित होगा।

1. महिंद्रा M55 थ्रेशर

महिंद्रा M55 थ्रेशर एक शानदार पेडी (धान) थ्रेशर है, जिसे खासतौर पर उच्च दक्षता के लिए डिजाइन किया गया है। इसका थ्रेशिंग यूनिट स्पाइक टूथ टाइप का है, जिसकी डायमीटर 543 मिमी और लंबाई 1800 मिमी है। यह मशीन सेमी-सिलेंड्रिकल कंकेव (Concave) के साथ आती है, जिसकी लंबाई 1430 मिमी है। इसमें ऑसिलेटिंग टाइप की दो सिव (Sieve) लगी होती हैं, जो अनाज को साफ करने में मदद करती हैं। इसके अलावा इसमें चार ब्लोअर दिए गए हैं, जिनमें सेंट्रीफ्यूगल टाइप के चार ब्लेड होते हैं और उनका डायमीटर 623 मिमी है। इस मशीन का कुल वजन लगभग 1250 किलोग्राम है और इसकी लंबाई 4175 मिमी, चौड़ाई 1957 मिमी तथा ऊंचाई 1890 मिमी है। महिंद्रा M55 थ्रेशर की आउटपुट क्षमता 1.2 से 1.25 टन प्रति घंटे तक होती है, जो मध्यम और बड़े किसानों के लिए उपयुक्त है। इसे चलाने के लिए 35 से 55 हॉर्स पावर (HP) यानी 26.1 से 41.0 किलोवाट की जरूरत होती है।

2. दशमेश 423 थ्रेशर

दशमेश कंपनी का मॉडल 423 थ्रेशर किसानों के बीच अपनी उच्च क्षमता के कारण काफी लोकप्रिय है। यह मशीन प्रति घंटे 4000 से 6000 किलोग्राम तक की मड़ाई करने में सक्षम है, जो बड़े पैमाने पर खेती करने वाले किसानों के लिए एक आदर्श विकल्प बनाती है। इसमें 690 मिमी × 1600 मिमी का ड्रम साइज दिया गया है, जो फसल को तेजी से प्रोसेस करता है। इस थ्रेशर में 6.00 ×

16.00 साइज के टायर लगाए गए हैं, जिससे इसे खेतों में आसानी से एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाया जा सकता है। इसका कुल वजन 1345 किलोग्राम है और इसमें दो ब्लोअर दिए गए हैं, जो अनाज को साफ करने में मदद करते हैं। इसकी सिव साइज 2080 मिमी × 650 मिमी है, जो उच्च गुणवत्ता की सफाई सुनिश्चित करती है। इस मशीन को चलाने के लिए कम से कम 35 HP ट्रैक्टर की आवश्यकता होती है।

3. लैंडफोर्स मल्टी क्रॉप थ्रेशर

लैंडफोर्स का मल्टी क्रॉप थ्रेशर एक बहुउद्देश्यीय मशीन है, जिसे कई प्रकार की फसलों के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है। इसका थ्रेशिंग ड्रम 915 मिमी डायमीटर और 762 मिमी लंबाई का होता है, जिसमें तीन कटिंग ब्लेड लगे होते हैं। यह मशीन मजबूत निर्माण के साथ आती है, जिसमें कर्व्ड पार्ट की शीट थिकनेस 3.5 मिमी और साइड वॉल्स की 3 मिमी होती है। इस मशीन में एक क्लीनिंग ब्लोअर दिया गया है, जिसमें एयर फ्लो एडजस्टमेंट की सुविधा होती है। इसके अलावा इसमें वैरिएबल स्पीड के सक्शन ब्लोअर होते हैं, जिनकी गति 700 से 950 RPM के बीच होती है। इसमें कन्वेयर बेल्ट फीडिंग सिस्टम भी दिया गया है, जिससे फसल को मशीन में डालना आसान हो जाता है। इस मशीन को चलाने के लिए 35 HP या उससे अधिक क्षमता के ट्रैक्टर की जरूरत होती है।

लैंडफोर्स थ्रेशर की बनावट और आयाम

लैंडफोर्स मल्टी क्रॉप थ्रेशर का डिजाइन मजबूत और टिकाऊ होता है। इसकी कुल लंबाई 4995 मिमी, चौड़ाई 1780 मिमी और ऊंचाई 2050 मिमी है। इसका वजन लगभग 1530 किलोग्राम होता है, जो इसे स्थिर और लंबे समय तक चलने योग्य बनाता है। इसमें 75 मिमी डायमीटर का मेन शाफ्ट और चार ट्रांसमिशन जॉइंट्स होते हैं, जो मशीन की कार्यक्षमता को बढ़ाते हैं। इस मशीन में 150 किलोग्राम का लोड व्हील भी दिया गया है, जिससे इसे खेत में आसानी से चलाया जा सकता है। इसकी मजबूत संरचना और आधुनिक फीचर्स इसे बहुउद्देश्यीय उपयोग के लिए उपयुक्त बनाते हैं, खासकर उन किसानों के लिए जो अलग-अलग फसलों की खेती करते हैं।

4. केएस एग्रोटेक मल्टीक्रॉप थ्रेशर

केएस एग्रोटेक का मल्टीक्रॉप थ्रेशर अपनी उच्च दक्षता और प्रदर्शन के लिए जाना जाता है। यह मशीन 25 HP या उससे अधिक क्षमता वाले ट्रैक्टर के साथ काम कर सकती है। इसमें स्पाइक टूथ टाइप का थ्रेशिंग सिलेंडर होता है, जो अनाज को तेजी और सटीकता से अलग करता है। इस मशीन की क्लीनिंग एफिशिएंसी लगभग 99.3% और थ्रेशिंग एफिशिएंसी 99.81% तक होती है, जो इसे बेहद प्रभावी बनाती है। इसके अलावा इसमें टूटे हुए दानों की मात्रा बहुत कम यानी लगभग 0.3096% होती है, जिससे किसानों को अधिक गुणवत्ता वाला उत्पादन मिलता है।

केएस एग्रोटेक थ्रेशर के आयाम और उपयोग

इस थ्रेशर का कुल वजन लगभग 2000 किलोग्राम होता है और इसकी लंबाई 4800 मिमी, चौड़ाई 2200 मिमी तथा ऊंचाई 2400 मिमी है। इसमें दो पन्यूमैटिक टायर दिए गए हैं और इसका ग्राउंड क्लीयरेंस 430 मिमी है, जिससे इसे असमान खेतों में भी आसानी से चलाया जा सकता है। यह मशीन मूंगफली, मक्का, सोयाबीन, अरहर, गेहूं, मूंग और उड़द जैसी कई फसलों के लिए उपयुक्त है। इसकी बहुउद्देश्यीय क्षमता किसानों को अलग-अलग मशीन खरीदने की जरूरत से बचाती है और लागत को कम करती है।

सही थ्रेशर का चयन

किसानों के लिए सही थ्रेशर का चयन उनकी खेती के प्रकार, फसल और बजट पर निर्भर करता है। यदि किसान केवल धान की खेती करते हैं, तो महिंद्रा M55 जैसे विशेष पेडी थ्रेशर उनके लिए उपयुक्त हो

सकते हैं। वहीं बड़े पैमाने पर खेती करने वाले किसान दशमेश 423 जैसे उच्च क्षमता वाले थ्रेशर का चयन कर सकते हैं।
यदि किसान विभिन्न प्रकार की फसलों की खेती करते हैं, तो लैंडफोर्स या केएस एग्रोटेक जैसे मल्टीक्रॉप थ्रेशर बेहतर विकल्प साबित हो सकते हैं। साथ ही, मशीन खरीदते समय उसकी क्षमता, पावर रिक्वायरमेंट, मेंटेनेंस और स्पेयर पार्ट्स की उपलब्धता का ध्यान रखना जरूरी है। सही थ्रेशर का चयन न केवल समय और श्रम की बचत करता है, बल्कि उत्पादन की गुणवत्ता और मात्रा को भी बढ़ाता है।

करतार 4000 कंबाइन हार्वेस्टर: जानें, कीमत, स्पेसिफिकेशन और फीचर्स

करतार 4000 कंबाइन हार्वेस्टर: मल्टीक्रॉप कटाई के लिए बेहतरीन विकल्प

कृषि क्षेत्र में तेजी से बढ़ते यंत्रीकरण के कारण आधुनिक कंबाइन हार्वेस्टर किसानों के लिए बेहद उपयोगी मशीन बन चुके हैं। इन्हीं उन्नत मशीनों में करतार 4000 कंबाइन हार्वेस्टर एक शक्तिशाली और भरोसेमंद मशीन मानी जाती है। यह मशीन गेहूं, धान और अन्य अनाज वाली फसलों की कटाई, मड़ाई और सफाई का काम एक साथ तेज़ी और कुशलता से करती है। मजबूत इंजन, बड़ी कटाई चौड़ाई और उच्च क्षमता के कारण यह बड़े खेतों में काम करने के लिए विशेष रूप से उपयुक्त है। नीचे इसके इंजन, कटर बार, थ्रेशिंग सिस्टम, क्लीनिंग सिस्टम और अन्य महत्वपूर्ण फीचर्स की विस्तृत जानकारी दी गई है।

करतार 4000 कंबाइन हार्वेस्टर का इंजन

करतार 4000 कंबाइन हार्वेस्टर में Ashok Leyland H6ET1C3RD22/1 मॉडल का शक्तिशाली इंजन दिया गया है। यह इंजन 101 हॉर्सपावर (HP) की क्षमता प्रदान करता है और 2200 RPM पर काम करता है, जिससे मशीन को भारी फसल में भी निरंतर और मजबूत प्रदर्शन मिलता है। इसमें 6 सिलेंडर वाला इंजन लगाया गया है, जो अधिक शक्ति और बेहतर ईंधन दक्षता प्रदान करता है। इंजन को ठंडा रखने के लिए इसमें वॉटर कूल्ड कूलिंग सिस्टम दिया गया है, जिससे लंबे समय तक लगातार काम करने पर भी मशीन का तापमान नियंत्रित रहता है। शक्तिशाली इंजन के कारण यह कंबाइन हार्वेस्टर घनी और भारी फसल की कटाई को आसानी से संभाल सकता है और खेत में बेहतर उत्पादकता सुनिश्चित करता है।

करतार 4000 का कटर बार

इस कंबाइन हार्वेस्टर में 4199 मिमी चौड़ाई वाला कटर बार दिया गया है, जो एक बार में अधिक क्षेत्र की कटाई करने में सक्षम है। बड़ी चौड़ाई के कारण किसान कम समय में अधिक खेत की कटाई कर सकते हैं, जिससे समय और श्रम दोनों की बचत होती है। कटर बार की ऊंचाई का समायोजन हाइड्रोलिक सिस्टम के माध्यम से किया जाता है, जिससे चालक आसानी से फसल के अनुसार कटाई की ऊंचाई सेट कर सकता है। इसकी न्यूनतम कटिंग ऊंचाई 100 मिमी और अधिकतम कटिंग ऊंचाई 700 मिमी तक रखी जा सकती है। इस सुविधा के

कारण यह मशीन अलग-अलग ऊंचाई वाली फसलों में भी प्रभावी तरीके से काम करती है।

करतार 4000 कंबाइन हार्वेस्टर रील सिस्टम

करतार 4000 में पिक-अप टाइप रील दी गई है, जो कटाई के समय फसल को कटर बार की ओर समान रूप से लाने में मदद करती है। इससे कटाई की प्रक्रिया सुचारू रूप से चलती है और अनाज की हानि कम होती है। रील की स्पीड को मैकेनिकल तरीके से एडजस्ट किया जा सकता है, जबकि इसकी ऊंचाई का समायोजन हाइड्रोलिक सिस्टम से किया जाता है। यह व्यवस्था ऑपरेटर को फसल की घनत्व और ऊंचाई के अनुसार मशीन को आसानी से नियंत्रित करने की सुविधा देती है।

करतार 4000 कंबाइन हार्वेस्टर थ्रेशर ड्रम (Thresher Drum)

इस कंबाइन हार्वेस्टर में मजबूत 600 मिमी व्यास और 1270 मिमी लंबाई वाला थ्रेशर ड्रम दिया गया है। यह ड्रम अनाज को भूसे से अलग करने का महत्वपूर्ण काम करता है। ड्रम की स्पीड 535 से 1210 RPM के बीच रखी जा सकती है, जिससे अलग-अलग प्रकार की फसलों के अनुसार थ्रेशिंग की गति को नियंत्रित किया जा सकता है। थ्रेशर ड्रम में 8 रास्प बार और 128 स्पाइक्स दिए गए हैं, जो अनाज को प्रभावी ढंग से अलग करने में मदद करते हैं। ड्रम की सेटिंग मैकेनिकल तरीके से एडजस्ट की जा सकती है, जिससे ऑपरेटर फसल के प्रकार के अनुसार थ्रेशिंग सिस्टम को सही तरीके से सेट कर सकता है।

करतार 4000 कंबाइन हार्वेस्टर कंकैव (Concave) सिस्टम

करतार 4000 कंबाइन हार्वेस्टर में उन्नत कंकैव सिस्टम दिया गया है, जो अनाज को अच्छी तरह से अलग करने में मदद करता है। इसमें कंकैव और थ्रेशर के बीच क्लियरेंस 3 से 16 मिमी तक रखा जा सकता है, जबकि कंकैव के बीच की दूरी 16 से 39 मिमी तक एडजस्ट की जा सकती है। इसमें 36 स्पाइक्स लगाए गए हैं और इनकी सेटिंग भी मैकेनिकल तरीके से की जाती है। सही कंकैव सेटिंग से अनाज की टूट-फूट कम होती है और साफ अनाज प्राप्त होता है।

करतार 4000 कंबाइन हार्वेस्टर स्ट्रॉ वॉकर

इस कंबाइन हार्वेस्टर में 5 स्ट्रॉ वॉकर दिए गए हैं, जो भूसे और अनाज को अलग करने में मदद करते हैं। इनका कुल क्षेत्रफल 46565 वर्ग सेंटीमीटर है, जिससे भूसे में बचे हुए अनाज को भी प्रभावी तरीके से अलग किया जा सकता है। इससे अनाज की हानि कम होती है और उत्पादन बढ़ता है।

करतार 4000 कंबाइन हार्वेस्टर क्लीनिंग सिस्टम

करतार 4000में शक्तिशाली क्लीनिंग सिस्टम दिया गया है, जिसका कुल क्षेत्रफल 16422 वर्ग सेंटीमीटर है। यह सिस्टम अनाज को भूसे और अन्य अवशेषों से साफ करने का काम करता है। इसकी सेटिंग भी मैकेनिकल तरीके से एडजस्ट की जा सकती है, जिससे अलग-अलग फसलों में साफ और बेहतर गुणवत्ता का अनाज प्राप्त होता है।

करतार 4000 कंबाइन हार्वेस्टर ग्राउंड स्पीड

इस कंबाइन हार्वेस्टर में विभिन्न गियर के अनुसार अलग-अलग गति उपलब्ध है।

- पहला गियर: 1.5 से 3.5 किमी/घंटा
- दूसरा गियर: 3.5 से 9.0 किमी/घंटा
- तीसरा गियर: 8.5 से 21.9 किमी/घंटा
- रिवर्स गियर: 3.5 से 9.0 किमी/घंटा

यह स्पीड रेंज ऑपरेटर को फसल की घनत्व और खेत की स्थिति के अनुसार मशीन को नियंत्रित करने की सुविधा देती है।

करतार 4000 कंबाइन हार्वेस्टर फैन सिस्टम

करतार 4000में शक्तिशाली 5 ब्लेड वाला फैन दिया गया है, जिसका डायमीटर 600 मिमी और चौड़ाई 1260 मिमी है। यह फैन अनाज को साफ करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसकी सेटिंग भी मैकेनिकल तरीके से की जा सकती है, जिससे सफाई प्रक्रिया अधिक प्रभावी बनती है।

करतार 4000 कंबाइन हार्वेस्टर स्टीयरिंग सिस्टम

इस कंबाइन हार्वेस्टर में हाइड्रोलिक स्टीयरिंग सिस्टम दिया गया है, जिससे मशीन को खेत में आसानी से मोड़ा और नियंत्रित किया जा सकता है। हाइड्रोलिक स्टीयरिंग के कारण ऑपरेटर को कम मेहनत लगती है और लंबे समय तक काम करना भी आसान हो जाता है।

करतार 4000 कंबाइन हार्वेस्टर क्षमता

करतार 4000कंबाइन हार्वेस्टर में बड़ी क्षमता वाले टैंक दिए गए हैं, जिससे मशीन लंबे समय तक बिना रुके काम कर सकती है।

- फ्यूल टैंक क्षमता: 380 लीटर
- ग्रेन टैंक क्षमता: 2.64 घन मीटर
- हाइड्रोलिक ऑयल टैंक: 25 लीटर

बड़ी फ्यूल टैंक क्षमता के कारण यह मशीन लंबे समय तक लगातार खेत में काम कर सकती है, जिससे कटाई की प्रक्रिया तेज़ और कुशल बनती है।

लैंडफोर्स के टॉप 3 कंबाइन हार्वेस्टर: जानें, कीमत, स्पेसिफिकेशन और फीचर

बेस्ट 3 लैंडफोर्स कंबाइन हार्वेस्टर - किसानों की पहली पसंद

आज के समय में खेती में तेजी से बढ़ते मशीनीकरण के कारण कंबाइन हार्वेस्टर किसानों के लिए एक महत्वपूर्ण कृषि मशीन बन चुका है। कंबाइन हार्वेस्टर की मदद से फसल की कटाई, मड़ाई और सफाई जैसे कई काम एक साथ कम समय में किए जा सकते हैं, जिससे किसानों का समय और श्रम दोनों की बचत होती है। इसी जरूरत को ध्यान में रखते हुए लैंडफोर्स कंपनी ने आधुनिक तकनीक से लैस कई शक्तिशाली कंबाइन हार्वेस्टर बाजार में उतारे हैं। ये मशीनें बेहतर इंजन पावर, मजबूत संरचना और बड़ी कटाई क्षमता के साथ आती हैं, जो गेहूं, मक्का और अन्य प्रमुख फसलों की कटाई को आसान बनाती हैं। अगर आप भी अपने खेतों के लिए एक भरोसेमंद कंबाइन हार्वेस्टर की तलाश कर रहे हैं, तो यहां हम आपको लैंडफोर्स के टॉप 3 कंबाइन

हार्वेस्टर के बारे में बता रहे हैं, जिनमें उनकी कीमत, प्रमुख स्पेसिफिकेशन और फीचर्स की जानकारी शामिल है।

1. लैंडफोर्स ट्रैक्टर ड्राइवन कंबाइन

लैंडफोर्स ट्रैक्टर ड्राइवन कंबाइन TDC-3900 एक शक्तिशाली ट्रैक्टर ड्रिवन कंबाइन हार्वेस्टर है, जिसे खेतों में तेज़ और प्रभावी कटाई के लिए डिजाइन किया गया है। यह मशीन L&T John Deere Tractor Model – 5310 V2 को प्राइम मूवर के रूप में उपयोग करती है। TDC-3900 कंबाइन हार्वेस्टर का डिजाइन खेतों में स्थिरता और बेहतर कार्यक्षमता को ध्यान में रखकर बनाया गया है। ट्रेलर के साथ इसकी कुल लंबाई लगभग 11010 मिमी है, जबकि ट्रेलर के बिना इसकी लंबाई 6820 मिमी रहती है। मशीन की चौड़ाई लगभग 2560 मिमी और ऊंचाई 4000 मिमी है। TDC-3900 कंबाइन हार्वेस्टर में हाइड्रोलिक ऑयल इमर्स्ड डिस्क ब्रेक सिस्टम दिया गया है। इस कंबाइन हार्वेस्टर में 3960 मिमी (शूज़ के साथ) का कटर बार वर्किंग विड्थ दिया गया है। इतनी चौड़ी कटाई क्षमता के कारण यह मशीन एक बार में ज्यादा फसल काट सकती है। TDC-3900 कंबाइन हार्वेस्टर में Collar Shaft Constant Mesh प्रकार का गियर बॉक्स दिया गया है, जो मजबूत और टिकाऊ माना जाता है। इसमें 3 फॉरवर्ड गियर और 1 रिवर्स गियर के साथ 3 स्पीड सेलेक्टर की सुविधा मिलती है। यह गियर व्यवस्था मशीन को अलग-अलग खेत परिस्थितियों में काम करने के लिए उपयुक्त बनाती है और ऑपरेटर को गति नियंत्रित करने की सुविधा देती है। इस कंबाइन हार्वेस्टर में 3960 मिमी (शूज़ के साथ) का कटर बार वर्किंग विड्थ दिया गया है। इतनी चौड़ी कटाई क्षमता के कारण यह मशीन एक बार में ज्यादा फसल काट सकती है।

2. लैंडफोर्स MAXX-4900 (मेज)

लैंडफोर्स MAXX 4900 (MAIZE) एक सेल्फ प्रोपेल्ड कंबाइन हार्वेस्टर है,जिसे विशेष रूप से मक्का जैसी फसलों की कटाई के लिए डिजाइन किया गया है। इस मशीन में **Ashok Leyland** का शक्तिशाली इंजन दिया गया है, जो लगभग **101** हॉर्सपावर **(HP)** की ताकत प्रदान करता है। इस कंबाइन हार्वेस्टर में बड़ा और उपयोगी ग्रेन टैंक दिया गया है**,** जिससे कटाई के दौरान बार-बार अनाज खाली करने की आवश्यकता कम हो जाती है। ग्रेन टैंक का साइज लगभग **2400 × 1219** मिमी है और इसकी ग्रेन टैंक क्षमता लगभग **2000** किलोग्राम है। इतनी बड़ी क्षमता के कारण किसान लंबे समय तक लगातार कटाई कर सकते हैं और इससे कार्य की उत्पादकता बढ़ती है। **MAXX 4900 (MAIZE)** कंबाइन हार्वेस्टर में मैकेनिकल कॉम्बिनेशन कांस्टेंट **&** स्लाइडिंग मेश स्पर गियर प्रकार का गियर बॉक्स दिया गया है। इसमें **3** फॉरवर्ड गियर और **1** रिवर्स गियर के साथ स्पीड चेंजर की सुविधा मिलती है।

3. लैंडफोर्स कंबाइन हार्वेस्टर

लैंडफोर्स MAXX 4900 एक सेल्फ प्रोपेल्ड कंबाइन हार्वेस्टर है, जिसे खेतों में तेज़ और प्रभावी कटाई के लिए डिजाइन किया गया है। इस मशीन में Ashok Leyland का भरोसेमंद इंजन दिया गया है, जो लगभग 101 हॉर्सपावर (HP) की ताकत प्रदान करता है।लर के साथ इसकी कुल लंबाई लगभग 12120 मिमी है, जबकि ट्रेलर के बिना इसकी लंबाई 8100 मिमी रहती है। मशीन की चौड़ाई 2940 मिमी और ऊंचाई लगभग 3700 मिमी है। MAXX 4900 कंबाइन हार्वेस्टर में Constant & Sliding Mesh Spur Gear प्रकार का गियर बॉक्स दिया गया है। इसमें 3 फॉरवर्ड गियर और 1 रिवर्स गियर के साथ स्पीड चेंजर की सुविधा मिलती है।इस कंबाइन हार्वेस्टर में 4290 मिमी का कटर बार (वर्किंग विड्थ) दिया गया है। इतनी चौड़ी कटाई क्षमता के कारण यह मशीन एक बार में अधिक फसल काट सकती है। इस कंबाइन हार्वेस्टर में बड़ा और उपयोगी ग्रेन टैंक दिया गया है। ग्रेन टैंक का आकार लगभग 2400 × 1219 मिमी है और इसकी ग्रेन टैंक क्षमता लगभग 2000 किलोग्राम है,

जो विशेष रूप से गेहूं की फसल के लिए उपयुक्त मानी जाती है। पर्याप्त क्षमता के कारण कटाई के दौरान बार-बार अनाज खाली करने की आवश्यकता कम होती है और काम की गति बढ़ती है।

लैंडफोर्स के कंबाइन हार्वेस्टर अपनी मजबूत बनावट, दमदार इंजन और उच्च कार्यक्षमता के कारण किसानों के बीच काफी लोकप्रिय हो रहे हैं। TDC-3900 ट्रैक्टर-ड्रिवन कंबाइन, MAXX 4900 (101 HP) और MAXX 4900 (75 HP) जैसे मॉडल अलग-अलग जरूरतों के अनुसार डिजाइन किए गए हैं। इन मशीनों में चौड़ा कटर बार, बड़ी ग्रेन टैंक क्षमता, मजबूत गियर बॉक्स और आधुनिक स्टीयरिंग सिस्टम जैसी सुविधाएं मिलती हैं, जो कटाई के काम को तेज़ और आसान बनाती हैं। यदि किसान अपने खेतों में अधिक उत्पादकता और समय की बचत चाहते हैं, तो लैंडफोर्स के ये कंबाइन हार्वेस्टर एक अच्छा और भरोसेमंद विकल्प साबित हो सकते हैं।

सहारनपुर में आयोजित मेरीखेती किसान पंचायत: पूसा वैज्ञानिकों ने बताए बीज उत्पादन और फसल प्रबंधन के आधुनिक तरीके

किसानों की आय बढ़ाने और बीज उत्पादन की उन्नत तकनीकों के प्रसार के उद्देश्य से दिनांक: 18 मार्च 2026 को गाँव- हरडेकी, तहसील- रामपुर मनिहारन, जिला- सहारनपुर (उत्तर प्रदेश) में मेरीखेती की किसान पंचायत में गुणवत्तायुक्त बीज उत्पादन" एवं फसल प्रबंधन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मेरीखेती की टीम किसानों तक सम्पूर्ण जानकारी पहुंचाने के लिए वहां उपस्थिति रही। इस अवसर पर भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली के कृषि वैज्ञानिकों ने गुणवत्तायुक्त बीज उत्पादन" एवं फसल प्रबंधन के बारे में किसानों को जानकारी दी। कार्यक्रम में बहुत सारे वरिष्ठ कृषि वैज्ञानिक, कृषि विशेषज्ञ, कृषि क्षेत्र के उघोगपति एवं किसान उपस्थित र हे। चलिए

जानते हैं, मेरीखेती के माध्यम से इस कार्यक्रम से किसानों को कैसे लाभ होगा।

गुणवत्तायुक्त बीज का फसल उत्पादन में क्या योगदान है?

कृषि क्षेत्र की निरंतर वृद्धि के लिए गुणवत्तायुक्त बीज सबसे महत्वपूर्ण घटक है। अन्य सभी आदानों की क्षमता काफी हद तक बीज की गुणवत्ता पर निर्भर करती है। यह अनुमान लगाया जाता है कि कुल उत्पादन में गुणवत्तायुक्त बीज का प्रत्यक्ष रूप से लगभग 15 से 20 प्रतिशत योगदान होता है, जोकि अन्य आदानों के कुशल प्रबंधन के साथ 40 से 45 प्रतिशत तक बढ़ाया जा सकता है।

गुणवत्तायुक्त बीज उत्पादन वाणिज्यिक फसल उत्पादन से भिन्न क्यों?

डॉ. ज्ञान कुमार मिश्रा और डॉ. संदीप कुमार लाल प्रधान वैज्ञानिक बीज विज्ञान और प्रद्योगिकी (भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान नई दिल्ली) ने कहा कि बीज उत्पादन वाणिज्यिक फसल उत्पादन से भिन्न है। सामान्य अर्थ में बीज उत्पादन का तात्पर्य प्रवर्धन सामग्री के उत्पादन से लिया जाता है, लेकिन व्यापक अर्थ में बीज उत्पादन के अंतर्गत बीज स्रोत का चयन करके बोने से लेकर फसल वृद्धि, कटाई, गहाई, प्रसंस्करण, भंडारण तथा बीज वितरण की क्रियाएं सम्मिलित की जाती हैं।

उत्पादन की प्रत्येक अवस्था में बीज गुणवत्ता के अनुरक्षण हेतु विशेषज्ञों की देखरेख में कुछ आवश्यक सिद्धांतों को ध्यान में रखना बहुत आवश्यक है ताकि उत्पादित बीज भौतिक एवं आनुवांशिक रूप से शुद्ध होने के साथ-साथ अच्छी अंकुरण क्षमता व उचित आर्द्रता वाला हो। गुणवत्तायुक्त बीज उत्पादन एक अतिसंवेदनशील कार्य है जिसमें योजनाबद्ध तरीके, समयबद्धता, तकनीकी विशेषज्ञता एवं गुणवत्ता नियंत्रण प्रणाली का कड़ाई से पालन किया जाता है।

गुणवत्तापूर्ण बीज से कृषि क्षेत्र में फसल की पैदावार बढ़ेगी

कृषि क्षेत्र में फसल की पैदावार प्रति इकाई समय/ क्षेत्र में बढ़ाने के लिए 'बीज' सबसे महत्वपूर्ण और सस्ता बुनियादी निवेश है। गुणवत्तापूर्ण बीज किसानों के लिए आवश्यक निवेशों में से एक है। इसके उपयोग से अन्य फसल उत्पादन कारकों की दक्षता में वृद्धि होती है।

सुनिश्चित गुणवत्तायुक्त बीज के उपयोग मात्र से तेज, ओजस्वी और एक समान अंकुरों का उभार, समान पौधों की आबादी, तेजी से वृद्धि, समकालीन परिपक्वता तथा प्रति इकाई क्षेत्र में अधिक संभावित उपज की अपेक्षा की जा सकती है। अथवा गुणवत्तायुक्त बीज उत्पादन किसानों की आय में अछि वृद्धि कर सकता है।

कृषि वैज्ञानिकों ने मेरीखेती प्लेटफॉर्म से जुड़ने के लिए किसानों को दी जानकारी

कृषि वैज्ञानिकों ने किसानों को जानकारी दी कि किसानों को सरकार से मिलने वाली ढेरों योजनाओं के प्रति जागरूक होने की अत्यंत आवश्यकता है। साथ ही, कृषि में आये दिन हो रहे नवाचारों के बारे में भी जानना बेहद जरूरी है।

इसलिए किसानों को मेरीखेती जैसे प्रतिष्ठित प्लेटफॉर्म से जुड़ना चाहिए। यहां आपको ना केवल राज्य बल्कि देश और दुनिया की कृषि संबंधी सही और सटीक जानकारी प्रदान की जाती है। मेरीखेती किसान जागरुकता के लिए ही हर माह मेरीखेती किसान पंचायत का आयोजन करता है।

कार्यक्रम में मेरीखेती ने किसानों के भोजन पानी का रखा विशेष ध्यान

मेरीखेती किसान पंचायत में आयोजित "गुणवत्तायुक्त बीज उत्पादन" एवं फसल प्रबंधन कार्यक्रम में किसानों के भोजन पानी का भी विशेष प्रबंध किया गया। किसानों को इस अवसर पर कई इनाम और खेती से जुड़ी पुस्तके भी वितरित की गयी।

इस कार्यक्रम में महिला किसानों की भीड़ देखने को

More Power, More Productivity

5310 PowerTech™ TremIV Tractor

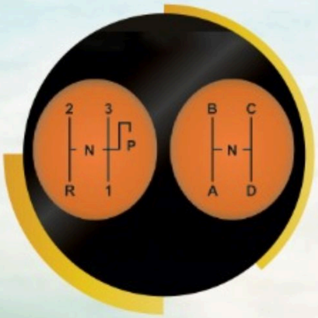

12 Forward &
4 Reverse Gears

Longer Service
Interval

मिली। महिला किसानों ने इस अवसर पर कृषि वैज्ञानिकों से कृषि के बारे में जानकारी प्राप्त की और बीज उत्पादन कार्यक्रम से जुड़ने का भी हर्ष जताया।

इस अवसर पर उपस्थित अतिथि

इस अवसर पर गाँव- हरडेकी में डॉ. संजीत कुमार, डॉ. कुशवाह – KVK (सहारनपुर), डॉ. ओमकार सिंह चौहान – प्रधानाचार्य गोचर, डॉ. योगेश चौधरी – गोचर महाविद्यालय, श्री कृष्ण चन्द सैनी – प्रतिनिधि, श्री जसवन्त सिंह सैनी – (ओधोगिक विकास), श्री ओमवीर – मंडल महामंत्री (भाजपा), श्री दीपक सैनी – मंडल अध्यक्ष (भाजपा), श्री धमेंद्र कुमार गौतम – जिला पंचायत सदस्य, श्री अरुण कुमार – प्रधानाचार्य, श्री संजय सिंह – प्रधानाचार्य, श्री हरपाल सिंह पाटिल – (प्रवक्ता) गोचर कृषि इण्टर कालेज, श्री जयराम– कार्यक्रम सयोजक आदि लोग उपस्थित थे। इस आयोजना में मेरीखेती के माध्यम से जानकारी पाकर कई किसानों के भाग लिया।

डेयरी फार्मिंग में कमाल: सुनील मेहला की गाय ने बनाया रिकॉर्ड, एक दिन में 78 लीटर दूध

करनाल की गाय बनी चर्चा का विषय - जानें, पूरी जानकारी

हरियाणा के करनाल में आयोजित प्रतिष्ठित नेशनल डेरी मेला करनाल में इस बार भी प्रदेश के पशुपालकों का दबदबा देखने को मिला। इस प्रतियोगिता में झंझाड़ी गांव के पशुपालक Sunil Mehla की गायों ने शानदार प्रदर्शन करते हुए सबका ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया। उनकी एक गाय ने एक दिन में 78 लीटर दूध देकर प्रतियोगिता में पहला स्थान प्राप्त किया। इतना ही नहीं, उनकी अन्य चार गायों ने भी एक दिन में 75 लीटर से अधिक दूध उत्पादन कर प्रतियोगिता में बेहतरीन प्रदर्शन किया और दूसरे तथा तीसरे स्थान पर अपनी जगह बनाई। इस उपलब्धि ने न केवल सुनील मेहला बल्कि उनके गांव और पूरे क्षेत्र का नाम रोशन कर दिया।

राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिता में दिखा दम

राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित इस डेयरी मेले में देश के कई राज्यों से पशुपालक अपने बेहतरीन दुधारू पशुओं के साथ पहुंचे थे। प्रतियोगिता काफी कड़ी थी, क्योंकि हर पशुपालक अपने उच्च उत्पादन वाले पशुओं के साथ मैदान में उतरा था। ऐसे में Sunil Mehla की गाय का 78 लीटर दूध उत्पादन करना एक बड़ी उपलब्धि माना जा रहा है। इस शानदार प्रदर्शन के कारण उनकी गाय ने प्रतियोगिता में पहला स्थान हासिल किया और मेले में मौजूद पशुपालकों तथा विशेषज्ञों का ध्यान अपनी ओर खींच लिया।

पहले भी बना चुकी हैं रिकॉर्ड

पशुपालक Sunil Mehla ने बताया कि उनकी गायें पहले भी कई पशु मेलों में चैंपियन रह चुकी हैं। पिछले वर्ष National Dairy Research Institute में आयोजित डेयरी मेले में उनकी एक गाय ने एक दिन में 80 लीटर से अधिक दूध उत्पादन कर एशिया स्तर का रिकॉर्ड बनाया था।

यह उपलब्धि न केवल उनके लिए बल्कि पूरे क्षेत्र के पशुपालकों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनी। उन्होंने बताया कि उनकी गायें कई राज्यों में आयोजित पशु मेलों और प्रतियोगिताओं में पुरस्कार जीत चुकी हैं। कई बार इन गायों के लिए लाखों रुपये तक के ऑफर भी आए, लेकिन उन्होंने अपनी गायों को बेचने का विचार नहीं किया। उनका कहना है कि इन गायों की वजह से ही उनके गांव, जिले और राज्य की पहचान दूर-दूर तक बनी है।

2016 से कर रहे हैं पशुपालन

Sunil Mehla ने बताया कि वे झंझाड़ी गांव में “शैंकी और सिल्लू डेयरी फार्म” नाम से डेयरी फार्म संचालित करते हैं। उन्होंने वर्ष 2016 में अपने भाई के साथ मिलकर पशुपालन का कार्य शुरू किया था। शुरुआत में उन्होंने सीमित संख्या में पशुओं के साथ डेयरी का काम शुरू किया, लेकिन धीरे-धीरे मेहनत और सही प्रबंधन के कारण उनका डेयरी फार्म लगातार आगे बढ़ता गया। वर्ष 2017 से वे नियमित रूप से विभिन्न पशु मेलों में अपने पशुओं को लेकर भाग ले रहे हैं और कई बार पुरस्कार भी जीत चुके हैं।

इस बार करनाल में आयोजित National Dairy Mela में वे अपनी पांच गायों को लेकर पहुंचे थे। इनमें से एक गाय ने 78 लीटर दूध देकर पहला स्थान हासिल किया, जबकि बाकी चार गायों ने भी 75 लीटर से अधिक दूध उत्पादन कर प्रतियोगिता में दूसरा और तीसरा स्थान प्राप्त किया।

संतुलित खुराक और अच्छी देखभाल से बढ़ता है दूध उत्पादन

सुनील मेहला का मानना है कि पशुओं की बेहतर दूध उत्पादन क्षमता के पीछे उनकी सही देखभाल और संतुलित आहार का बहुत बड़ा योगदान होता है। वे अपनी गायों को नियमित रूप से हरा चारा, सलाद, संतुलित फीड और तोड़ी देते हैं। इसके अलावा पशुओं को साफ-सुथरे वातावरण में रखा जाता है और समय-समय पर उनकी स्वास्थ्य जांच भी कराई जाती है।

उनका कहना है कि डेयरी फार्म से उन्हें अच्छी आय प्राप्त होती है। जहां खेती से साल में एक या दो बार ही आय होती है, वहीं पशुपालन ऐसा व्यवसाय है जिससे हर महीने नियमित आय होती रहती है। यही वजह है कि कई किसान अब पशुपालन को खेती के साथ जोड़कर अपनी आय बढ़ा रहे हैं।

डेयरी फार्म में 200 से अधिक पशु

सुनील मेहला के डेयरी फार्म में वर्तमान समय में करीब 200 पशु मौजूद हैं। उन्होंने बताया कि पिछले कुछ महीनों में वे करीब छह पशु मेलों में भाग ले चुके हैं। इन प्रतियोगिताओं में उनकी गायों ने पांच बार पहला स्थान और एक बार दूसरा स्थान हासिल किया है। लगातार मिल रही इस सफलता के कारण उनके डेयरी फार्म की पहचान भी तेजी से बढ़ रही है और कई लोग उनके फार्म को देखने तथा पशुपालन की जानकारी लेने के लिए पहुंचते हैं।

गर्मी के मौसम में विशेष देखभाल

सुनील मेहला का कहना है कि दुधारू पशुओं की देखभाल हर मौसम में जरूरी होती है, लेकिन गर्मियों में विशेष ध्यान देना पड़ता है। इस मौसम में पशुओं को समय-समय पर नहलाना जरूरी होता है ताकि उन्हें गर्मी से राहत मिल सके। इसके अलावा उनके शेड में पंखे और कूलर लगाए जाते हैं, जिससे तापमान नियंत्रित रहता है और पशुओं को आरामदायक वातावरण मिलता है।

उन्होंने बताया कि उनकी गायों की कीमत कई बार लाखों रुपये तक लग चुकी है, लेकिन वे उन्हें बेचने का कोई इरादा नहीं रखते। उनका मानना है कि इन गायों की वजह से ही उन्हें पूरे हरियाणा और देश के कई हिस्सों में पहचान मिली है, इसलिए वे इनकी देखभाल को अपनी सबसे बड़ी जिम्मेदारी मानते हैं।

भारत में गायों की नस्लें - भारत में गाय की प्रमुख दुग्ध उत्पादक नस्लें

भारत विभिन्न गायों की नस्लों का घर है और यह अपनी जीवंत संस्कृति और विविध भू-प्राकृतिक स्वरूपों के लिए प्रसिद्ध है।

सदियों से मवेशी भारतीय कृषि और ग्रामीण जीवन का एक अभिन्न हिस्सा रहे हैं, जो देश की अर्थव्यवस्था, संस्कृति और धार्मिक परंपराओं में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। प्रत्येक नस्ल की अपनी अनोखी विशेषताएँ और महत्व होते हैं। इस ब्लॉग में हम भारत में पाई जाने वाली कुछ प्रमुख गाय की नस्लों का विस्तार से अध्ययन करेंगे।

भारत में गायों की नस्लें

भारत में मवेशियों को आमतौर पर दूध और दुग्ध उत्पादों के लिए पाला जाता है। हिंदू धर्म में गाय को पवित्र माना गया है और इसे मारा नहीं जाता। ज़ेबू (Zebu) नस्ल की गायें मुख्य रूप से भारत और एशिया, अमेरिका और ऑस्ट्रेलिया के उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में पाई जाती हैं। भारतीय गायों का वैज्ञानिक नाम Bos indicus है और यह Bovidae परिवार से संबंधित हैं। भारतीय गायों की नस्लों ने भारतीय लोगों के जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है और निभा रही हैं। नवीनतम आंकड़ों के अनुसार, देश में लगभग 50 गायों की नस्लें हैं, जिनमें दुग्ध उत्पादक, कार्य के लिए और दोनों कार्यों के लिए उपयुक्त नस्लें शामिल हैं।

गायों की विभिन्न नस्लें

भारत में गायों की नस्लों को मुख्यत: उनके पालन के उद्देश्य के आधार पर वर्गीकृत किया गया है। इस वर्गीकरण के अनुसार, भारत में गायों की नस्लों के प्रकार हैं:

- दुग्ध उत्पादक नस्लें (Dairy or Milch breeds)
- दुग्ध और कार्य के लिए उपयोगी नस्लें (Dual Purpose breeds)
- खेती के कार्य के लिए उपयोगी नस्लें (Draught breeds)

1. दुग्ध उत्पादक नस्लें

इन नस्लों की गायें अधिक मात्रा में दूध देती हैं,

जबकि इनके बैल कमजोर श्रमिक होते हैं। भारतीय दुग्ध नस्लों में साहीवाल, रेड सिंधी, गिर और थारपारकर शामिल हैं। ये नस्लें आम तौर पर 1600 किलोग्राम से अधिक दूध देती हैं।

2. दुग्ध और कार्य के लिए उपयोगी नस्लें

इन नस्लों की गायें औसत मात्रा में दूध देती हैं और बैल श्रम के लिए उपयुक्त होते हैं। ये नस्लें प्रति बार प्रसव में 500 से 1500 किलोग्राम दूध देती हैं। उदाहरण: हरियाणा, कांकरेज, थारपारकर।

3. खेती के कार्य के लिए उपयोगी नस्लें

इन नस्लों की गायें औसतन प्रति बार प्रसव में 500 किलोग्राम से कम दूध देती हैं, लेकिन बैल मजबूत श्रमिक होते हैं। ये आमतौर पर सफेद रंग की होती हैं।
जोड़ी में बैल 1000 किलोग्राम तक भार खींच सकते हैं और दिन में 30-40 किलोमीटर की दूरी तय कर सकते हैं। इस श्रेणी में हल्लिकर, उम्बलाचेरी, अमृतमहल, कंगायम जैसे उदाहरण शामिल हैं।

भारत की प्रमुख दुग्ध नस्लें

1. गिर नस्ल

- उत्पत्ति: गुजरात के सौराष्ट्र (गिर जंगल)
- अन्य राज्य: महाराष्ट्र, राजस्थान
- त्वचा का रंग: सफेद शरीर पर चॉकलेट ब्राउन, गहरे लाल या काले धब्बे
- सींग: अर्धचंद्राकार
- दूध उत्पादन: 1200 से 2200 किलोग्राम

2. साहीवाल नस्ल

- उत्पत्ति: मोंटगोमरी क्षेत्र (अब पाकिस्तान)
- अन्य नाम: लोला, लंबी बार, मोंटगोमरी, मुल्तानी, तेली
- रंग: हल्का लाल या पीला, सफेद धब्बों के साथ
- विशेषता: भारत की सबसे अधिक दूध देने वाली नस्ल
- दूध उत्पादन: 1600 से 3500 किलोग्राम

3. रेड सिंधी नस्ल

- उत्पत्ति: कराची व हैदराबाद (अब पाकिस्तान)
- रंग: गहरे से हल्के लाल रंग के साथ सफेद धारियाँ
- दूध उत्पादन: 1250 से 2200 किलोग्राम

द्वैत उपयोगी नस्लें

1. थारपारकर नस्ल

- उत्पत्ति: थारपारकर (अब पाकिस्तान), राजस्थान में भी पाई जाती है
- अन्य नाम: व्हाइट सिंधी, ग्रे सिंधी, थारी
- रंग: सफेद या हल्का ग्रे
- दूध उत्पादन: 1800 से 2600 किलोग्राम
- बैल: कृषि व भार ढोने के लिए उपयुक्त

2. हरियाणा नस्ल

- उत्पत्ति: हरियाणा के रोहतक, हिसार, जींद, गुरुग्राम
- अन्य राज्य: पंजाब, यूपी, एमपी
- सींग: छोटे, शरीर मजबूत
- दूध उत्पादन: 800 से 1600 किलोग्राम
- बैल: मजबूत श्रमिक

3. कांकरेज नस्ल

- अन्य नाम: वड़ाड, वाघेड, वधियार
- उत्पत्ति: गुजरात के कच्छ और राजस्थान के बारमेर, जोधपुर क्षेत्र
- रंग: स्टील ग्रे से सिल्वर ग्रे
- चाल: अनोखी “सवा चाल”
- दूध उत्पादन: लगभग 1500 किलोग्राम
- बैल: तेज और मजबूत, गाड़ी व हल जोतने में उपयुक्त

खेती के कार्य के लिए उपयोगी नस्लें

1. हल्लिकर नस्ल

- उत्पत्ति: कर्नाटक (विजयनगर राज्य)
- रंग: ग्रे या डार्क ग्रे

- आकार: मजबूत, मंझोला, उन्नत माथा और लंबे सींग
- विशेषता: उत्कृष्ट ट्रॉटिंग क्षमता और भार वहन

2. अमृतमहल नस्ल

- उत्पत्ति: कर्नाटक के हासन, चिकमंगलूर और चित्रदुर्ग जिलों में
- रंग: ग्रे से लेकर काला, थूथन, पैर और पूंछ काले
- सींग: लंबे और नुकीले

3. कंगायम नस्ल

- अन्य नाम: कोंगनाड, कोंगु
- उत्पत्ति: तमिलनाडु (ईरोड, धारापुरम, कोयंबटूर)
- रंग: गायें सफेद या ग्रे, बैल के शरीर के आगे व पीछे हिस्सों में काले निशान
- सींग: पीछे की ओर हल्के मुड़े हुए, आंखें बड़ी और काली पट्टियों से घिरी

किसानो की बात
मेरी खेती के साथ

www.merikheti.com

Contact No : +91 8800777501
Address : 5A-46, 6th Floor, Cloud 9 Tower, Vaishali,
Sector -1, Ghaziabad - 201010